R. K. Advertising

के माध्यम से 'जैन गजट' में विज्ञापन बुक कराने हेतु सम्पर्क करें-

शेखर चन्द पाटनी

राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट

मो. 9667168267

रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर (आर. के. एडवरटाइजिंग)

मो. 8003892803

ईमेल

rkpatni77@gmail.com

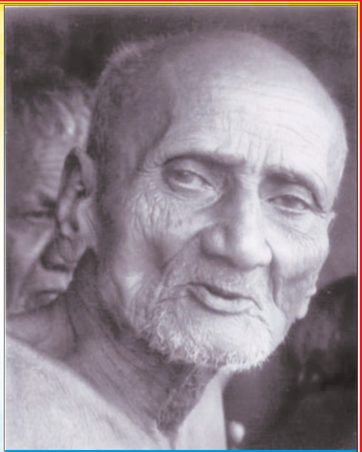

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 31 अंक 28 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 12 मई 2025, वीर नि. संवत् 2551

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

।।श्री शांति-वीर-शिव-धर्म-अजित-वर्धमान-परम्पराचार्येभ्यो नमः।।

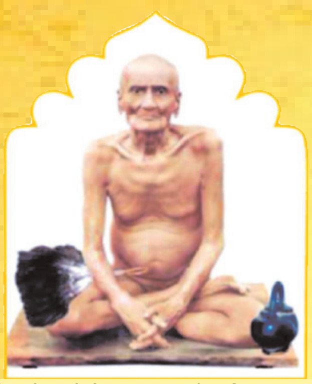

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज

प्रथम पट्टाचार्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य 108 श्री वीरसागर जी महाराज

द्वितीय पट्टाचार्य सिद्धांत संरक्षक आचार्य 108 श्री शिवसागर जी महाराज

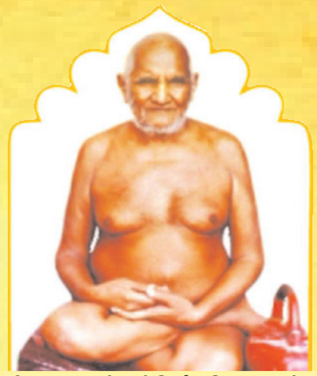

तृतीय पट्टाचार्य धर्म शिरोमणि आचार्य 108 श्री धर्मसागर जी महाराज

चतुर्थ पट्टाचार्य अभिक्षण ज्ञानपयोगी आचार्य 108 श्री अजितसागर जी महाराज

श्री श्री १०८ आचार्य श्री शांतिसागरजी मुनि महाराज व संघ । पास में बैठे हुए : मुनिश्री वीरसागरजी (नांदगाँव) व मुनिश्री नेमिसागरजी (पुतूरकर मद्रास) । नीचे बैठे हुए : ब्र. ठाकोरदासजी, ऐलक पायसागरजी (गोकाक), ऐलक चंद्रसागरजी (नांदगाँव), मुनिश्री नेमिसागरजी (कुड़चीकर), ऐलक, पायसागरजी (एनापुर), मुनिश्री आदिसागरजी (अंकलीकर)। पास में खडे हुए : ब्र. दादा घोदे व ब्र. जिनदासजी

नोट - यह फोटो २२-१०-१९२५ कुंभोज का है जो दि. जैन सूरत अंक में वी. स. २४५३ में, १९३७ शांतिसिंधु में, जैन बोधक १९५१ में, जैन गजट हीरक जयन्ती विशेषांक १९५२ में, तथा फलटन (महा.) में मूल फोटो उपलब्ध है ।

वात्सल्य वारिधि, जिनधर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव, पंचम पट्टाचार्य

108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज

सन् 1925 के कुंभोज चातुर्मास में प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शान्तिसागर जी महाराज के श्री चरणों में साधनारत

मुनिश्री आदिसागर महाराज (अंकलीकर)

पुण्यार्जक/नमनकर्ता

घाटलिया आदेश कुमार डाडमचन्द जी (अर्पित ट्रेडर्स) पारसोला तह. धरियावद जिला प्रतापगढ़ (राज.)

हाँ हाँ, हमने सुमति धाम में इतिहास को बनते देखा है...

चिरंजी लाल बगड़ा, कोलकाता

कहते हैं, पवित्र गंगा को भागीरथ जी, धरती पर लेकर आए थे, हमनें उसे नहीं देखा परंतु हाँ, हमने अहिल्या बाई होलकर की नगरी इंदौर में, एक जैन युवा दंपत्ति, मनीष सपना गोधा के पुरुषार्थ को देखा है, जिन्होंने साक्षात समवशरण को इंदौर के सुमति धाम मे अवतरित कर दिया। चार सौ दिगंबर संतों का चतुर्विद संघ, एक हजार के करीब ब्रह्मचारी भाई-बहनें, हजारों हजार श्रावक श्राविकाएं और उन सबकी उपस्थिति में छः दिवसीय भव्यातिभव्य, प्रातः से लेकर देर रात पर्यंत हो रहे विभिन्न आयोजन, संतों आचार्यों की कल्याणकारी दिव्य मंगल देशना, आधुनिक तकनीक निर्मित दो हजार ड्रोन कैमरा द्वारा हर रोज अलग अलग सतरंगी प्रदर्शन प्रबंध इतना व्यवस्थित और अनुशासित कि व्यवस्था कौन कर रहा है, सब कुछ अदृश्य, बिना पहचान पत्र के भीतर प्रवेश निषिद्ध, लाखों की हर समय भीड़, आवाजाही फिर भी सब कुछ व्यवस्थित। अद्भुत पट्टाचार्य महोत्सव, उत्तर भारत में प्रथम बार ऐसा अभूतपूर्व संतों का महाकुंभ, अविस्मरणीय ऐतिहासिक आयोजन, परंतु कोई डाक-बोली नहीं, मंच से कोई सम्मान वगैरह की औपचारिकता नहीं, सब जगह सिर्फ एक ही नाम-मनीष सपना गोधा।

आईये, ऐसे व्यक्तित्व की कुछ विशेषताओं से समाज को रूबरू करवाते हैं, कोई कहता है, 50-60 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं, तो कोई इसे 100-125 करोड़ का खर्च बताता है, परंतु मुख्य बात तो यह है कि वहाँ रुपयों की कोई चर्चा ही नहीं है। किसी से न कुछ लेना है और न समाज को कोई हिसाब किताब देना है।

चलों, मान लेते हैं धन तो हाथ का मैल है, किसी ने दिल खोलकर दान कर दिया तो कौन सा तीर मार लिया, उनके पास धन है, तो खर्च कर दिया।

दूसरी विशेषताः धन का दान देना सहज है, परंतु आज के दौर में समय-दान देना अक्सर दुर्लभ होता है। इतने विशाल आयोजन के प्रबंध एवं परिकल्पना के लिए एक पूरी टीम, एक फौज चाहिए होती है, महीनों का श्रम लगता है, परंतु यहां तो कोई भी दिखाई नहीं देता। सुदूर अंचलों में जा-जाकर संतों को, आचार्य संघों को निमंत्रण देने से लेकर, परिकल्पना करना, संपूर्ण परिसर का निर्माण, इतने संतों के प्रवास-आहार- निहार - विहार की सुचारु व्यवस्था, लाखों भक्तों और अनुयायियों के आवास-यातायात- सुस्वादु भोजन की यथायोग्य व्यवस्था, प्रचार-प्रसार की व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था, प्रशासनिक सहयोग, सब कुछ ऐसा लग रहा था, स्व-संचालित हो रहा है, मानो कोई अदृश्य शक्ति कार्य कर रही है, परंतु सब के पीछे एक ही नाम - मनीष सपना गोधा। अद्भुत प्रबंधन कौशल, सब कुछ प्रोफेशनल तरीके से व्यवस्थित।

अब हम तीसरी सबसे महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय विशेषता की बात करते हैं- चलो धन था, लगा दिया, प्रबंधन सब एवेंट् वालों से करवा लिया परंतु इतनी प्रशंसा सुनने के बाद, आदमी का फूल कर कुप्पा हो जाना सहज मानवीय कमजोरी होती है, एक दो दिन के छोटे से परिवारिक आयोजन में ही हम सब बौखला जाते हैं, आवले बावले हो जाते हैं, परंतु प्रकृति ने मनीष सपना गोधा को तो विशेष रूप से बनाया है, जिन्हें इतने विशाल आयोजन के प्रबंध व्यस्तता के बावजूद, छहों दिन, हमनें उन्हें हर कार्य क्रम को खुद एंजॉय करते देखा है, एकदम सहज, विनम्र, प्रमुदित् एवं मुस्कान के साथ हर वक्त सक्रिय, तत्पर, चेहरे पर कोई थकान नहीं, हर समय फूलों की तरह ताजागी के एहसास के साथ मौजूद, गुरू भक्ति में निरंतर थिरकते कदम, किसी अदृश्य देवीय शक्ति के कारण ही ऐसा संभव हो सकता है। गुरू भक्ति और समर्पण की इसी बात ने हमें सर्वाधिक प्रभावित किया।

ऐसे इतिहास पुरुष, मनीष सपना गोधा धन्य हैं, धन्य हैं उनकी देव शास्त्र गुरू के प्रति असीम भक्ति, समर्पण और त्याग, उनकी ऊर्जा और उनके प्रबंध कौशल को नमन।

विगत् एक सौ वर्षों के ज्ञात इतिहास में एक अकेले परिवार द्वारा इतने विशाल आयोजन का संभवतः यह एक मात्र उदाहरण है। इंदौर की धरती पर एक नये इतिहास की नींव पड़ी है जिसने समाज में एक बडी रेखा खींची है, जिसे निकट भविष्य में शायद ही कोई दोहरा सकें।

पूज्य पट्टाचार्य 108 श्री विशुद्ध सागर जी महामुनिराज के असीम पुण्य की अनुमोदना, जिन्हें ऐसा गुरुभक्त मिला है, गुरुदेव को कोटिशः नमन! इंदौर के सर सेठ हुकुमचंद जी कासलीवाल के बारे में पुराने लोग जानते है, परंतु वर्तमान में तो मनीष सपना गोधा का नाम एक किवदंति की तरह संपूर्ण देश की जैन समाज के लोगों के मुँह पर स्थापित हो गया है। उनके असीम पुण्य की आत्मीय अनुमोदना, जैनम् जयतु शासनम्।

जैन गजट की सदस्यता, विज्ञापन या सहयोग राशि 'जैन गजट' के पक्ष में पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्र नगर शाखा, लखनऊ- 226004 उ.प्र. में सेविंग खाता संख्या 2405000100102500 (RTGS/NEFT IFSC CODE - PUNB 0185600) में आनलाइन/चैक द्वारा जमा कराकर डिपोजिट स्लिप सहित अपने पूर्ण नाम-पते, पिन कोड सहित निम्न पते/वाट्सअप/ईमेल पर भेजकर सूचित करने की कृपा करें-

जैन गजट कार्यालय- श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004
मोबा./वाट्सअप- 7607921391, मोबा. 7505102419
Email: jaingazette2@gmail.com

समाज से विनम्र निवेदन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा की जा रही धार्मिक एवं सामाजिक कल्याण की योजनाओं में दान देकर सहयोग प्रदान कीजिये। संस्था को 12 I/80G (प्रमाण पत्र संख्या URN-AAHTS7154EF2025101) एवं CSR-1 (प्रमाण पत्र संख्या -SRN-N30616809) के तहत आयकर में छूट प्राप्त है। संपर्क : मोबाइल/वाट्सअप - 9415008344, 9415108233, 7607921391, 7505102419

SHRI BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN MAHASABHA
ACCOUNT NO. - 2405000100033312
RTGS/IFSC/NEFT Code - PUNB0185600 PUNJAB NATIONAL BANK, RAJENDRA NAGAR, Lucknow
Pin Code - 226004 (U.P.)

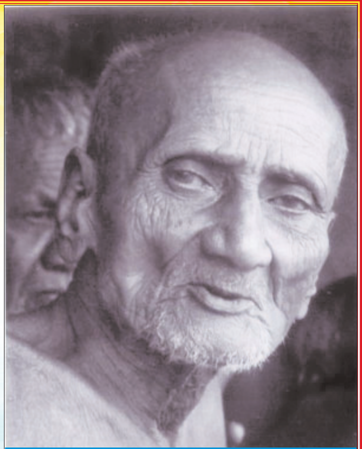

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

पुणे में हुआ जैन धरोहर दिवस का आयोजन

05

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 31 अंक 28 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 12 मई 2025, वीर नि. संवत् 2551

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

मुम्बई में जैन धरोहर दिवस का आयोजन सम्पन्न

स्व. निर्मल कुमार जैन (सेठी) की चतुर्थ पुण्यतिथि पर हुआ यह आयोजन

राज कुमार सेठी
महामंत्री/तीर्थ संरक्षिणी महासभा

श्री निर्मल कुमार जी सेठी की चतुर्थ पुण्य तिथि जैन धरोहर दिवस 27 अप्रैल 2025 को मुकेश पटेल आडीटोरियम, मुम्बई (महा.) में मनाया गया। इस कार्यक्रम की शुरूआत मधुर बांसुरी वादक श्री सिद्धार्थ मोहन के भजनों से हुई। मंगलाचरण की प्रस्तुति णमोकार महामंत्र के साथ की गई। सेठी जी के चित्र का अनावरण श्री हुलासचंद सेठी, श्री रमेश जैन, श्री सीपी जैन, श्रीमती अनूप बाई, श्रीमती संतोष बाई एवं श्रीमती सरोज बाई जी द्वारा किया गया। दीप प्रज्ज्वलन श्री के.सी. जैन, ब्र. श्री देवेन्द्र भैया, श्री गजराज जी गंगवाल, श्री प्रकाशचंद बड़जात्या एवं अन्य वीआईपी द्वारा किया गया। सेठी जी की तस्वीर पर श्री राजेन्द्र कटारिया, श्री तरूण काला, श्री शिखरचंद पहाड़िया, श्री डी यू जैन ने फूल अर्पित किये। श्रीमती कल्पना बाकलीवाल सुपुत्री स्व. निर्मल कुमार जी सेठी ने परम पूज्य आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के आशीर्वचन का पाठ किया एवं परम पूज्य आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के एलईडी पर आडियो के साथ फोटो दिखाये गये। महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल ने श्री सेठी जी की तस्वीर के सामने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये सराक क्षेत्र में 16 से 20 अप्रैल तक कराये गये पंचकल्याणक की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि काफी संख्या में लोग पंचकल्याणक में उपस्थित हुये थे। पुरातत्वविद् अधीक्षक एएसआई कोलकाता श्री शुभ मजूमदार ने जैन धरोहर दिवस 2022 से 2025 तक

शेष पृष्ठ 6 पर.....

WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
शुद्ध जैन भोजन किचन कारावैन के साथ
वर्ष 2025 मे 7 देशो की सैर
20 April, 18 May, 1 June, 15 June
यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
FRANCE, PARIS, ITALY
AUSTRIA, AMSTERDAM
GERMANY, SWITZERLAND
परस्परोपग्रहो जीवानाम्
ला: नेमचंद जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ
VAYUDOOT WORLD TRAVELS PVT. LTD.
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

875 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण
LIVE
शांतिधारा : 7:30 AM
संध्या आरती - 7:00 PM
@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9784857991

हस्तेड़ा जैन मंदिर दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
अन्य जानकारी हेतु स्थानीय संपर्क सूत्र
मनीष गंगवाल-सह अध्यक्ष
मोबाइल नंबर 95880 20330

इस अतिशय क्षेत्र में किसी भी तरह की बोली, चंदा, डाक या राशि का आग्रह वर्जित है।

JK MASALE SINCE 1957

— Breakfast Matlab —
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

Buy online on jkcart.com

जयपुर के इतिहास में प्रथम बार अत्यंत उत्कृष्ट हृदय स्पर्शी मार्मिक अलौकिक जैन रामायण कथा

यह राम कथा परम पूज्य ध्यान दिवाकर मुनि प्रवर अनुष्ठान विशेषज्ञ विशिष्ट राम कथाकार श्री जय कीर्ति जी गुरुदेव के अमृतमई वाणी में अद्भुत कथा का रसपान कराया जाएगा

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

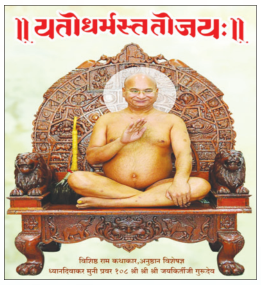

राजस्थान की राजधानी जयपुर शहर के इतिहास में राजस्थान जैन युवा महासभा एवं जैन कनेक्ट के संयुक्त तत्वाधान में श्री दिगम्बर जैन मंदिर दुर्गापुरा ट्रस्ट एवं सकल जैन समाज जयपुर के सहयोग से जयपुर शहर में प्रथम बार 18 से 27 मई 2025 तक हृदय स्पर्शी मार्मिक अलौकिक जैन रामायण कथा का वाचन होगा। यह राम कथा हमारे पूर्वाचार्य भगवान श्री रविषेन आचार्य द्वारा लिखित पद्म पुराण भाग 1 भाग 2 भाग 3 इन तीन पुस्तकों में वर्णित अत्यंत उत्कृष्ट जिन भक्ति से युक्त जिन शासन के सिद्धांतों को प्रतिपादन करने वाली कथा है। प्रसिद्ध समाजसेवी जय कुमार जैन कोटा वालों ने कार्यक्रम की जानकारी देते हुए बताया कि इस कथा के अंतर्गत भगवान मुनिसुव्रत स्वामी के शासन काल में उत्पन्न हुए आठवें बलभद्र श्री राम के जन्म से लेकर के मोक्ष जाने तक की उनकी अत्यंत उत्कृष्ट कथा का वर्णन किया गया है। हमारे जिन शासन में श्री राम और उनका पूरा कथानक लगभग 12 लाख साल पहले घटित हुआ है। इस कथा का पूरा विवरण अत्यंत जिन भक्ति से परिपूर्ण है। जीवन को जीने के लिए उत्कृष्ट मापदंडों को बताया जाता है। अनुशासन और धैर्य की पराकाष्ठा के साथ में घर परिवार में बड़ों की आज्ञा का पालन करना तथा उसे आज्ञा पालन के कारण मिलने वाले जीवन के उत्कृष्ट फलों को इस कथा के माध्यम से दर्शाया गया है। यह कथा एक ऐसे महापुरुष की कथा है जो हमें जीवन जीने की प्रेरणा सिखाती है और बताती है कि हर परिस्थिति में हमें किस प्रकार से जीवन जीना चाहिए। संगीतकार विद्यासागर बड़े बड़े अक्कीवट जो कि संगीत विशारद है और वह कर्नाटक के प्रसिद्ध संगीतकार है। रामायण कथा महोत्सव अत्यंत प्रभावशाली उत्कृष्ट संगीत में मधुर वाणी के द्वारा एक जीवन के नए अनुभव को देने वाली है, उक्त भव्य संगीतमय जैन रामायण कथा पद्म पुराण पर आधारित है। इस राम कथा के माध्यम से हम जान सकते हैं कि जिन राम को पूरे संसार में पूजा जा रहा है, माना जा रहा है वह राम इस जिन शासन में अयोध्या नगरी में ही उत्पन्न हुए परंतु हमें इसका ज्ञान नहीं होने से सामान्य जनता यह नहीं समझ पाती है कि राम का जन्म जैन कुल में ही हुआ था, आप इस कथा को सुनकर के समझ पाएंगे, इतने बड़े महापुरुष का स्थान हमारे जिन शासन में ही है।

पूरे देश में 16 मई से 27 मई 2025 तक श्रमण संस्कृति संस्कार शिविर किए जाएंगे आयोजित

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

श्री दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के तत्वावधान में पूरे देश में 16 मई से 27 मई 2025 तक आयोजित किए जाने वाले 'श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर' के पोस्टर व बैनर का 04.05.25 रविवार को छात्रावास के सभागार में आयोजित सभा में संस्थान के पदाधिकारियों की उपस्थिति में भव्य विमोचन किया गया। संस्थान के अध्यक्ष एस. के. जैन (आई पी एस), संयुक्त निदेशक प्रो. अरुण कुमार जैन व मानद मंत्री सुरेश कासलीवाल ने बताया कि जैन धर्म व श्रमण संस्कृति के संपोषण व संवर्धन हेतु श्रावकों को सुसंस्कारित करने का प्रयास संस्थान शिविरों के माध्यम से 1993 से बराबर करता आ रहा है।

इसी कड़ी में इन ग्रीष्म कालीन शिविरों का आयोजन किया जा रहा है, जिनका मुख्य उद्देश्य जीवन को अनुशासित व संस्कारित करना होता है, बालिका छात्रावास की अधिष्ठात्री शीला जैन ड्योडा व निर्देशिका डा. वंदना जैन के अनुसार रविवार की सभा में संयोजकों व मंदिरों के अध्यक्ष व मंत्री की उपस्थिति में शिविर संबंधित सभी आवश्यक जानकारियां दी गई तथा शिविरार्थियों हेतु आवश्यक सामग्री बेग, पुस्तकें, कापियाँ, बैनर, पोस्टर आदि वितरित किए गए हैं। शिविर के मुख्य संयोजक उत्तम चंद पाटनी व निदेशक डा. शीतल चंद्र जैन ने बताया कि जयपुर में करीब पचास से भी अधिक स्थानों पर शिविर लगाए जाएँगे। जिनकी पूरी तैयारियां कर ली गई हैं। शिविर में अध्यापन हेतु विद्वान संस्थान से प्रत्येक स्थान पर भेजे जाते हैं जो नियत पाठ्यक्रम व जैन ग्रंथों का बच्चों व बड़ों को अभिरुचि अनुसार समझाते हुए अध्यापन कराते हैं। इधर सन्त सुधासागर बालिका छात्रावास सांगानेर की विदुषियाँ भी स्थानीय शिविरों में महती धर्म प्रभावना करती हैं, प्रचार-प्रसार प्रभारी पदम जैन बिलाला ने बताया कि शिविर लगा रहे मंदिरों में से तीन श्रेष्ठ मंदिरों को समापन समारोह में पुरस्कृत किया जाएगा तथा सभी विषयों में प्रथम आने वालों का जयपुर स्तर पर प्रतिष्ठित रत्नाकर एवार्ड हेतु एग्जाम द्वारा चयन होगा। जयपुर के संस्कार शिक्षण शिविरों में पाँच हजार से ज्यादा शिविरार्थियों द्वारा स्वाध्याय हेतु सहभागिता का अनुमान है, इस अवसर दिगम्बर जैन महिला संभाग राजस्थान अंचल की अध्यक्षा शालिनी बाकलीवाल ने ग्रीष्मकालीन शिविरों में पूर्ण सहयोग व संयुक्त संभाग द्वारा समय समय पर विशेष कार्यक्रम आयोजन हेतु आश्वस्त किया। आज की सभा में दो सौ से अधिक संयोजक गण, मंदिर पदाधिकारी, स्थानीय शिक्षक सहित कई गणमान्य श्रेष्ठियों की गरिमामय उपस्थिति रही। सभा अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन व बालिकाओं द्वारा मंगलाचरण के साथ शुरू हुई। सभा में पूना से डिंपल गदिया, दर्शन बाकलीवाल, प्राचार्य सतीश शास्त्री सहित बहुत से गणमान्य श्रेष्ठियों की उपस्थिति रही। सभा के अंत में सभी का आभार व्यक्त किया गया।

दिगंबर जैन बीसपंथ समाज द्वारा चिकित्सा शिविर में 131 रोगियों की जांच कर औषधियों वितरण की वितरण की

महावीर कुमार सरावगी, संवाददाता

नैनवां, 7 मई बुधवार। सबसे पहले डॉक्टर द्वारा भगवान महावीर के चित्र पर दीप प्रज्वलन का समारोह प्रारंभ हुआ। समारोह की अध्यक्षता कमल कुमार जी मारवाड़ा ने की। मुख्य अतिथि नाथू लाल जैन मोडीका, विशेष अतिथि देवेंद्र जैन एडवोकेट, संरक्षक जैन समाज अध्यक्ष प्रमोद जैन शाह आदि सभी अतिथियों डॉक्टरों रामचंद्रन, श्रीमती ज्योति जैन, डॉ. विवेक पारीक नीमच, आंख रोग विशेषज्ञ डॉक्टर योगेश दांत विशेषज्ञ का तिलक माला साल प्रशस्ति पत्र भेंटकर जोरदार स्वागत सम्मान किया।

दूर-दूर गांव से देहात से कई लोगों ने पहुंचकर शिविर में लाभ लिया। समाजसेवी भवानी सिंह सोलंकी समाज के प्रकाश जैन बाबा द्वारा स्वागत सम्मान किया गया। इस अवसर पर चिकित्सा शिविर में पूर्ण सहयोग करने पर समाज द्वारा महावीर सरावगी का समाज द्वारा सम्मान तिलक माला दुपट्टा भेंट सम्मान किया। इस समारोह में समाज के विनोद कुमार जैन मारवाड़ा, मोहनलाल जैन मारवाड़ा, पुखराज ओसवाल, कैलाश गर्ग, पारस बरमुंडा, महेंद्र सेठी, प्रवीण सरावगी, अविनाश सरावगी, अमित शर्मा, ज्ञान चंद्र हरसोडा, चंद्रप्रकाश मोडीका, टोनी जैन, अमित शर्मा, विकास जैन मोडीका आदि थे। शिविर का संपूर्ण संचालन विनोद कुमार जैन सरावगी बनी द्वारा किया गया। निःशुल्क शिविर में बेंगलुरु से आए डॉक्टर रामचंद्र हड्डी रोग विशेषज्ञ सर्जन द्वारा कैंप में 55 रोगियों की जांच कर एम आर आई देखकर दवाइयां दी। डॉक्टर विवेक नीमच जी द्वारा 40 की जांच कर चार रोगियों की ऑपरेशन की सलाह दी। दांत रोगी दंत रोग के डॉक्टर योगेश द्वारा 36 लोगों की जांच कर उन्हें निशुल्क औषधि वितरण की। शिविर में जांच करने आए सभी महिला पुरुषों को समाज द्वारा पेयजल चाय नाश्ता आदि उपलब्ध कराया गया। शिविर समापन पर सभी डॉक्टर शाबान ने समाज का आभार व्यक्त किया। बहुत अच्छा चिकित्सा शिविर लगा। काफी लोगों को शिविर लगने से लाभ हुआ।

अक्षय तृतीया और ऋषभदेव भगवान के प्रथम पारणा दिवस का हुआ भव्य समापन

फागी संवाददाता

चंडीगढ़, 1 मई 2025। अहिंसा चैरिटेबल सेवा समिति (रजि.), चंडीगढ़ द्वारा श्री दिगम्बर जैन मंदिर, सेक्टर-27 में आयोजित अक्षय तृतीया एवं प्रथम तीर्थंकर भगवान 1008 ऋषभदेव जी के प्रथम पारणा दिवस के पावन अवसर पर दो दिवसीय भव्य आयोजन का सफल समापन विभिन्न आयोजनों के साथ संपन्न हुआ। कायक्रम की शुरुआत 30 अप्रैल को भगवान ऋषभदेव जी को इक्षु रस (गन्ने का रस) अर्पित कर की गई। तत्पश्चात भंडारे का उद्घाटन श्रीमती त्रिशला जैन निवासी सेक्टर-44, चंडीगढ़ और मनोरमा जैन द्वारा रिबन खोलकर किया गया। समिति द्वारा उन्हें शॉल ओढ़ाकर सम्मानित भी किया गया।

इस अवसर पर पूर्व प्रधान श्री नवरत्न जैन एवं श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन को भी जैन धर्म की प्रभावना हेतु विशेष सम्मान प्रदान किया गया, दो दिवसीय इस आयोजन में लगभग 50,000 श्रद्धालुओं ने इक्षु रस एवं खीर के प्रसाद का लाभ उठाया। आयोजन के दौरान 13,700 किलोग्राम इक्षु रस और खीर श्रद्धालुओं को वितरित की गई। इसके साथ ही जीरकपुर और पंचकुला में भी समिति द्वारा भंडारे का आयोजन किया गया, जहाँ लगभग 1,800 श्रद्धालुओं ने इक्षु रस का पुण्य लाभ लिया। इस आयोजन की सफलता में सकल जैन समाज चंडीगढ़ का सहयोग अत्यंत सराहनीय रहा, जिसके लिए समिति ने आभार व्यक्त किया। अगले वर्ष की योजनाः समिति ने घोषणा की कि अगले वर्ष (2026) अक्षय तृतीया पर चंडीगढ़ व आसपास के 24 स्थानों पर एक साथ भव्य भंडारे आयोजित करने की योजना है, जिससे अधिक से अधिक श्रद्धालु लाभान्वित हो सकें और जैन संस्कृति की व्यापक प्रभावना हो। समिति के प्रमुख पदाधिकारीगणः परम संरक्षक - श्री नवरत्न जैन, राजेन्द्र प्रसाद जैन, अध्यक्ष-अजय जैन, उपाध्यक्ष-सुरेन्द्र जैन, महासचिव-रजनीश जैन, कोषाध्यक्ष-सचिन जैन। विशिष्ट सदस्य - आर. के. जैन, राजकुमार जैन, संजय जैन, श्रीमती सुषमा जैन, श्रीमती संजना जैन, श्रीमती मंजू जैन, श्री नरेश गुप्ता, श्री हंस जैन, विनय जैन, पवन बिंदल, आर.पी. जैन, श्याम लाल जैन। समिति के अध्यक्ष श्री अजय जैन ने सभी सहयोगियों, श्रद्धालुओं, कार्यकर्ताओं का हृदय से धन्यवाद किया और आगामी वर्षों में इससे भी भव्य आयोजन का संकल्प लिया।

तहसील परिसर में पक्षियों के लिए परिंडे लगाए

ए यू बैंक के सौजन्य से महावीर इंटरनेशनल युवा कुचामन सिटी द्वारा तहसील परिसर में पक्षियों के लिए परिंडे लगाए गए अक्षय तृतीया के शुभ दिन को दान दिवस के रूप में मनाया जाता है। सामाजिक संस्था सबको प्यार सबकी सेवा 'जीवो और जीने दो' के उद्देश्यों वाली संस्था सामाजिक संस्था महावीर इंटरनेशनल परिवार की युवा विंग द्वारा दान भावना से प्रेरित होकर ए यू बैंक के तत्वाधान में इस भीषण गर्मी में पक्षियों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था करने के लिए आज अक्षय तृतीया के दिन कुचामन तहसील परिसर में 20 व शाकम्भरी माताजी मन्दिर रोड पर ज्ञानचन्द कुमार अर्पित पहाड़िया परिवार के सौजन्य से 11 परिंडे लगाकर सार संभार की जिम्मेदारी ली। पूर्व में लगाए पौधों की सार संभाल कर पानी दिया। युवा अध्यक्ष वीर आनन्द सेठी ने बताया कि इस दौरान अतिरिक्त जिला कलेक्टर राकेश कुमार गुप्ता, ए यू बैंक से क्लस्टर हेड बजरंग शर्मा, मैनेजर विशाल जैन के साथ कार्यालय से बलवीर जी, शिवराज सिंह जी, जितेंद्र राठौड़, एडवोकेट सुरेंद्र राठौड़, बैंक से नीरज सैन, प्रतीक गर्ग, देवेंद्र सिंह, नैतिक जैन एवं संस्था से महावीर इंटरनेशनल के अध्यक्ष वीर रामावतार गोयल, वीर सुरेश गंगवाल, वीर रतनलाल मेघवाल, करुणा गोयल वीर राहुल झांझरी, वीर शुभम काला ने 'आवो अपना फर्ज निभाए, प्रकृति का कुछ कर्ज चुकाए' भावना से सेवा कार्य किए। वीर सुभाष पहाड़िया ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

- शेखर चन्द पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.
OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला   श्रीमती सरिता काला   संदीप-स्वाति पाटनी   श्रेयांस-स्नेहा काला
RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com
SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

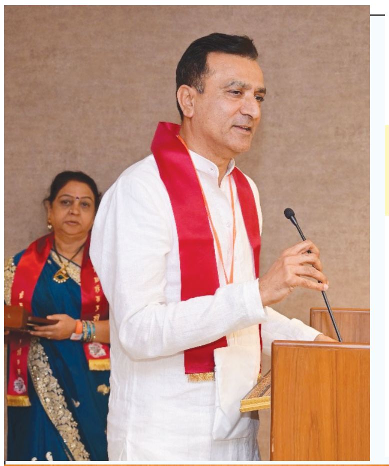

पुणे में हुआ जैन धरोहर दिवस का आयोजन

स्व. निर्मल कुमार जैन (सेठी) की चतुर्थ पुण्यतिथि पर

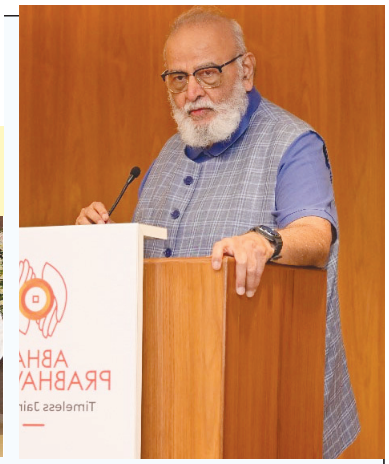

पुणे स्थित अभय प्रभावना केंद्र में स्वर्गीय श्री निर्मल कुमारजी सेठी की चतुर्थ पुण्यतिथि के अवसर पर श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा एवं सेठी ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में गत 27 अप्रैल, 2025 को जैन धरोहर दिवस का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध उद्योगपति, अमर प्रेरणा ट्रस्ट के चेयरमैन तथा अभय प्रभावना केंद्र के संस्थापक श्रीमान अभयजी फिरोदिया मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। सुबह कार्यक्रम का आयोजन अभय प्रभावना म्युजियम की विविध ध्वनि-चित्र प्रभावों की मनमोहक झलकियों के साथ हुआ, जिसमें जैन तत्वज्ञान, भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों पर आधारित जानकारी प्रस्तुत की गई जो सभी के मन मस्तिष्क में अधोरेखित हुई। दोपहर के कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमान हुलासचंद सेठी, श्रीमान धर्मेन्द्र सेठी एवं सेठी परिवार के सदस्य श्रीमान अभय फिरोदिया, श्रीमान राजकुमार सेठी, श्रीमान देवेंद्र बाकलीवाल, श्रीमती सुजाता शहा एवं श्रीमान सुरेंद्र गांधी ने भगवान महावीर स्वामी के चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन के द्वारा किया। इसके पश्चात सौ. पूर्वा शहा (पुणे) एवं उनके विद्यार्थियों द्वारा णमोकार मंत्र पर आधारित वंदना एवं पुणे जैन महिला मंडल द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया गया। इसके उपरांत स्व. श्री निर्मल कुमारजी सेठी के चित्र पर श्रीमान अभय फिरोदिया तथा महाराष्ट्र एवं गोवा प्रांत श्रुत संवर्धिनी महासभा के महामंत्री श्री देवेंद्र बाकलीवाल द्वारा माल्यार्पण किया गया। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा एवं सेठी ट्रस्ट की ओर से श्रीमान अभय फिरोदिया को सम्मान पत्र भेंट किया गया, जिसका वाचन श्री धर्मेंद्र सेठी ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री देवेंद्र बाकलीवाल (अधीक्षक, केंद्रीय जीएसटी व सीमा शुल्क) ने की। मंच पर तीर्थ संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजकुमार सेठी (कोलकाता), पुरातत्व अधीक्षक श्री बसंत शिंदे, नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर अभय कुमार उपस्थित थे। श्रीमान राजकुमार सेठी, राष्ट्रीय महामंत्री को इस अवसर पर समाज स्तम्भ की उपाधि से विभूषित किया गया। डेक्कन कॉलेज के प्रो. डॉ. श्रीकांत गणवीर, डॉ. मालिनी गोस्वामी भी विशेष रूप से सम्मानित किए गए। प्रतिष्ठित पुरातत्त्वविद् डॉ. शुभ मजुमदार, जैन पुरातत्वविद श्री अश्विन बम्ब, श्री अरुण मलिक भी मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। सभी ने स्व. श्री निर्मलकुमार सेठी के 40 वर्षों तक देव, शास्त्र और गुरु सेवा में दिए गए योगदान तथा जैन धरोहर के संरक्षण हेतु किए गए कार्यों की विशेष सराहना की। डॉ. शुभ मजुमदार ने अपने वक्तव्य में भारतीय इतिहास के संरक्षण में जैन धर्म के योगदान को रेखांकित करते हुए जैन धरोहर दिवस के महत्व को समझाया। अपने प्रेरणादायक संबोधन में श्री अभय फिरोदिया ने कहा कि जैन धर्म पारंपरिक रूप में मानवी मूल्यों पर आधारित विचार धारा और तत्वज्ञान है और अब समय आ गया है कि अगली पीढ़ी के युवाओं को इन संस्कारों और धरोहरों से जोड़ने के ठोस प्रयास किए जाएँ। उन्होंने कहा कि जैन मूल्य समयातीत हैं और सद्भावना, करुणा तथा आत्म-नियंत्रण को बढ़ावा देते हैं। उन्होंने विशेष रूप से जैन मूल सिद्धांतों को रेखांकित किया। कार्यक्रम का सफल समन्वयन श्री विकास जी जैन (दिल्ली) एवं मंच संचालन सौ. रुचि चोविश्या जैन (इंदौर) द्वारा किया गया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री धर्मेंद्र सेठी ने प्रस्तुत किया गया। स्थानीय प्रबंधन में समाजसेवी और कुशल उद्यमी श्रीमती सुजाता शहा ने विशेष भूमिका निभाई।

इस कार्यक्रम में बैंगलोर से श्री अशोक सेठी, इचलकरंजी के श्री धनराज बाकलीवाल, डीमापुर नागालैंड से श्री अरुण बाकलीवाल, श्री कमल जैन (दिल्ली), श्री यतिश जैन (जबलपुर), अशोक छाबड़ा (गुवाहाटी), अशोक चूड़ीवाल, अजित चांदवाड़, महीपाल पहाड़िया (नागौर), संजय गंगवाल (रायपुर), भास्कर जैन, सुमीत जैन (नागपुर) तथा छत्रपति संभाजी नगर से तीर्थ संरक्षिणी महासभा महाराष्ट्र प्रांत के महामंत्री श्री महावीर ठोले, अध्यक्ष श्री वर्धमान पांडे, श्री महावीर सेठी, श्री राजकुमार कासलीवाल, पुरातत्व संयोजक श्री अजीत लोहाडे, महाराष्ट्र श्रुत संवर्धिनी अध्यक्ष श्री नंदकुमार ठोले सहित पुणे के प्रमुख समाजसेवी सर्वश्री मिलिंद फड़े, अतुल शहा, डॉ. कल्याण गंगवाल, डॉ. प्रकाश बड़जात्या, सुनील कटारिया, विनय चूड़ीवाल, मनीष बड़जात्या, जितेंद्र बाकलीवाल सागर चूड़ीवाल, अनिल पहाड़े, महेंद्र गंगवाल, अजय लोहाड़े, संतोष कासलीवाल, दिलीप गंगवाल एवं सौ. भूपाली पहाड़े, वंदना बाकलीवाल आदि उपस्थित रहे। इस आयोजन में समाज के काफी संख्या में प्रमुख कार्यकर्ता, विश्वस्तगण एवं महासभा पदाधिकारी उपस्थित रहे।

मुम्बई में 27 अप्रैल, 2025 को सम्पन्न जैन धरोहर दिवस में उपस्थित महानुभाव

संपादकीय

विलुप्त होते संस्कार और जीवन मूल्य

जीवन खुले मैदान की तरह है। उस पर महल भी बनाया जा सकता है और झोपड़-पट्टी भी। जीवन कोरे कागज की भांति है, उस पर सुन्दर चित्र भी आँक सकते हैं तो उसे धब्बों से कलंकित भी कर सकते हैं। हम अपने उज्ज्वल आचरण के बल पर उसमें एक सुन्दर चित्र को अभिव्यक्त कर सकते हैं तो अपने स्याह आचरण से उसे कलंकित भी कर सकते हैं। जीवन मिट्टी की तरह है, उससे मंगल-कलश भी बनाया जा सकता है तो शराब का कुल्हड़ भी। जीवन अनगढ़ पत्थर की तरह है उससे भगवान् भी बनाये जा सकते हैं तो उससे सिलौटी भी बनाई जा सकती है।

हर शिशु में अपार संभावनाएँ होती हैं। जीवन का निर्माण मनुष्य के चिंतन, सोच, प्रवृत्ति और आचरण पर निर्भर करता है। हमारी जैसी सोच हो, जैसा चिन्तन हो, जैसा चरित्र हो, हमारा जीवन उसी के अनुरूप ढल जाता है। हमारे जीवन के उत्थान और पतन का आधार हमारा अच्छा-बुरा आचरण है। चरित्र की पवित्रता से जहाँ हमारे जीवन में निर्मलता प्रकट होती है, वहीं चरित्र की विकृति से हमारा जीवन विषाक्त हो जाता है। चरित्र हमारे जीवन में उज्ज्वलता का अमृत भरता है। तो चरित्र हमारे जीवन में कलुषता का विष भी भर डालता है। दोनों स्थितियाँ हमारे चरित्र पर निर्भर करती है। प्रश्न है चरित्र क्या है ? चरित्र हमारी अच्छी-बुरी भावनाओं और वृत्तियों का समूह है। हमारे मन में जैसी अच्छी-बुरी भावनायें उत्पन्न होती हैं, उसकी छाप हमारे अंतरंग पर पड़ती है। वे ही संस्कार बनकर हमारे अच्छे और बुरे जीवन के संप्रेरक बनते हैं। उसी निमित्त से हमारा अच्छा या बुरा जीवन बनता है। दूसरे शब्दों में यदि हम कहें तो हमारे अच्छे-बुरे संस्कार ही हमारे अच्छे-बुरे जीवन के आधार हैं। इस अर्थ में देखें तो हमारे जीवन के दो पक्ष हैं एक शुभ पक्ष और दूसरा अशुभ पक्ष। ठीक वैसे ही जैसे कि प्रकृति में दो पक्ष होते हैं - शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष। हमारे जीवन में जो अच्छाई का पक्ष है, जीवन में जो सदुण हैं वे शुक्लपक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं। अहिंसा, करुणा, प्रेम, दया, मैत्री और आत्मीयता की शुभ भावनायें हमारे जीवन के वे शुभ पक्ष हैं, जो शुक्ल पक्ष की चन्द्र कलाओं की तरह हमारे आत्म गुणों को निरन्तर वृद्धिंगत करते रहते हैं। इसके विपरीत हमारे मन में पलने वाली क्रूरता, हिंसा, शोषण, आतंक और दूसरे प्रकार की दुर्वृत्तियाँ वे सब चित्त के कृष्ण पक्ष हैं, जो हमारी आत्मा में कालिमा भरते हैं। दोनों स्थितियाँ हमारे ऊपर निर्भर हैं। हम चाहें तो अपने जीवन को उज्ज्वल बना सकते हैं और चाहें तो विकृत।

हम चाहें तो अपने जीवन को रोशन कर सकते हैं और हम चाहें तो अपने जीवन में अंधेरा भी भर सकते हैं। प्रकाश और अन्धकार दोनों हमारे हाथ में हैं। हम जिस दिशा में चलते हैं हमारे जीवन की परिणति वैसी ही बन जाती है। जैसा हम चाहेंगे हमारा जीवन वैसा बनेगा इसलिये संत कहते हैं - यदि अपने जीवन को उज्ज्वल बनाना चाहते हो, जीवन में उन्नति करना चाहते हो तो उसके सकारात्मक पक्ष को प्रबल बनाने की कोशिश करो। अपने जीवन को दुर्गति से बचाना चाहते हो तो नकारात्मक और दुष्प्रवृत्तियों के अशुभ आचरण से अपने को बचाने की कोशिश करो। सबसे बड़ी बात तो यह है कि क्या कारण है कि निरन्तर सोचते, सुनते रहने के बाद भी हम अच्छी प्रवृत्तियों को नहीं अपना पाते और बुरी प्रवृत्तियों से बच नहीं पाते। जब कभी भी हम धर्मसभाओं में जाते हैं, हमारे लिये यही उपदेश दिया जाता है कि हम अच्छी प्रवृत्तियों को अपनाये, अच्छे संस्कारों को अपनायें, अपने जीवन को बेहतर ढंग से जियें, बुराई से बचे। लेकिन इसके बाद भी हम न तो अच्छी प्रवृत्तियों को अपना पाते हैं और न ही बुरी प्रवृत्तियों से अपने आप को बचा पाते हैं। इसका कारण क्या है? कैसे हमारे जीवन में अच्छी प्रवृत्तियाँ आयें ? अच्छी प्रवृत्तियाँ तब आयेंगी जब चित्त में अच्छे संस्कार गढ़ेंगे। हमारी सारी प्रवृत्तियों का संप्रेरक हमारे मन में पलने वाला संस्कार होता है। जैसे हमारे संस्कार होते हैं, वैसा हमारा जीवन बनने लगता है। इस बात को मनोवैज्ञानिक भी कहते हैं कि मनुष्य जैसे परिवेश में रहता है, जैसे उसके आनुवांशिक संस्कार होते हैं और जैसे वातावरण में वह जीता है उसके अनुरूप उसकी प्रवृत्ति बनती है। मनोवैज्ञानिकों के हिसाब से देखें तो वे व्यक्तित्व के निर्माण के 2 घटक कहते हैं -

1. Enviroment वातावरण
2. Heridity वंशानुगतक्रम

हम वातावरण से जो कुछ सीखते हैं, वह हमारी अच्छी-बुरी प्रवृत्ति का आधार बनता है और दूसरा वंशानुगतक्रम से लोग जो संस्कार लेकर आते हैं वह हमारे अच्छे-बुरे जीवन का निर्माण करते हैं। पर संत कहते हैं- जीवन निर्माण के ये दो कारक तो है ही, लेकिन इनके अलावा तीसरा भी एक महत्वपूर्ण कारक है। वह है- संकल्प। संकल्प में बड़ी शक्ति है, जिसके बल पर हम अच्छे-बुरे जीवन का निर्माण कर सकते हैं।

यह बात सच है कि Enviroment वातावरण या पर्यावरण का हमारे चित्त पर बड़ा असर पड़ता है। यह बात भी सच है कि बहुत-कुछ चीजें तो हम अपने माँ-बाप के पेट से सीखकर आते हैं, लेकिन इन सबके बाद भी संकल्प में वह ताकत है, जो पाषाण से भी पानी निकालने की सामर्थ्य रखती है। यदि हमारी संकल्प - शक्ति प्रबल है, हमारी इच्छाशक्ति दृढ़ है तो हम अपने दुर्बलताओं पर विजय पाने में समर्थ हो सकते हैं। यदि संकल्प शिथिल हैं तो कभी भी कोई बड़ी उपलब्धि प्राप्त नहीं कर सकते। संत कहते हैं - संकल्प सिद्धियों का आधार है। हमारे मन में इच्छा-शक्ति होनी चाहिये। जितने बड़े- बड़े ऋषि -मुनि और सिद्ध साधक हुये हैं, उन्होंने अपने जीवन की ऊंचाईयों को केवल अपने संकल्प के बल पर ही पहुँचाया है।

गुरु के साथ शिष्य चले जा रहे थे। रास्ते में एक बड़ी चट्टान दिखी। शिष्य ने गुरु से पूछा कि गुरुदेव ये चट्टान बड़ा कठोर है, क्या चट्टान से भी कठोर कोई चीज है ? गुरु कुछ बोलें इससे बहले ही दूसरा शिष्य बोला कि - चट्टान से भी कठोर है लोहा। जो इस चट्टान को भी तोड़ डालने की सामर्थ्य रखता है। तो दूसरे शिष्य ने पूछा कि - गुरुदेव, क्या लोहे से भी ज्यादा कठोर कोई चीज है ? तीसरे शिष्य ने तुरन्त जबाव दिया - लोहे से भी ज्यादा प्रभावशाली है अग्नि। जो लोहे को भी गला देने की सामर्थ्य रखती है। तभी चौथे शिष्य ने कहा कि गुरुदेव, अग्नि से भी ज्यादा प्रभावशाली है पानी। जो अग्नि को भी बुझा देने की सामर्थ्य रखता है। शिष्य की बात पूरी ही नहीं हो पाई थी कि अगले शिष्य ने कहा कि - गुरुदेव, मुझे तो पानी से भी ज्यादा प्रभावशाली दिखाई पड़ता है - हवा। जो पानी को भी उड़ा ले जाती है। शिष्यों का यह क्रम चल रहा था। अगला शिष्य कुछ बोलने ही वाला था कि गुरु बोले- सुनो, सबसे ज्यादा प्रभावशाली यदि कुछ है तो वह है मनुष्य के मन का संकल्प। मनुष्य अपने संकल्प के बल पर पाषाण को तोड़ सकता है, लोहे को गला सकता है, आग को बुझा सकती है, पानी को उड़ा सकता है। सब कुछ मनुष्य के संकल्प पर है। मनुष्य का संकल्प यदि दृढ़ है तो बुरे से बुरे संस्कारों को भी जीता जा सकता है। लोग कहते हैं Values Down हो रही है। आखिर इसका कारण क्या है ? इसका सबसे प्रबल कारण है कि हमारे जीव मूल्यों के प्रति जैसी हमारी निष्ठा होनी चाहिए, संकल्प होना चाहिए, उन्हें हमने क्षीण कर दिया है। जब तक उन्हें खोते रहेंगे, तब तक हमारे जीवन में सदुणों की प्रतिष्ठा कैसे हो सकेगी ? संस्कार कैसे जागेंगे ?

संत कहते हैं - जीवन में अच्छाइयों को प्रतिष्ठापित करना चाहते हो तो एक बात को दिल-दिमाग में आंकन कर लो - अच्छाइयों की प्रतिष्ठा केवल जीवन की निष्ठा पर निर्भर करती है। हमारी निष्ठा क्षीण होती जा रही है। हमने अपने आदर्शों को महत्व देना बन्द कर दिया है। हम उन्हें कतई अपने जीवन में स्थान नहीं देते हमारी प्राथमिकतायें बदल गई हैं। जिस संस्कृति में हमने जन्म लिया उसमें अर्थ से अधिक परमार्थ को प्राथमिकता देने की बात कही गई है। उसमें सर्वोच्च प्राथमिकता जीवन-मूल्यों को आत्मसात् करने की दी जाती रही है। लेकिन हमने उन्हें गौण करके उन व्यर्थ बातों को अपना लिया जो हमारे जीवन को विकृत बनाती हैं, जिनके कारण हमारा जीवन कलंकित होता है। संत कहते हैं - शुभ संस्कारों को अपने मन में जगाइये और दुष्प्रवृत्तियों से अपने आपको निरन्तर बचाने की कोशिश करते जाइये।

हम सबके सामने दो व्यक्ति हैं - एक राम और दूसरा रावण। राम की आज हर कोई पूजा करता है। रावण का नाम लेते ही हमारे मन में घृणा के भाव उत्पन्न हो जाते हैं। क्या कारण है ? आखिर राम के प्रति श्रद्धा और रावण के प्रति घृणा की स्थिति का जिम्मेदार कौन है ? एक ही है राम के मन में थे - शुभ संस्कार। जिनके कारण वे जब तक गृहस्थ रहे मर्यादा पुरुषोत्तम बने और जब गृह को त्यागकर दिगम्बरत्व को

धारण कर मुनि बने तो उन्होंने अध्यात्म की साधना की। आदर्श मुनि बने। आगे चलकर भगवत्ता को अपने जीवन में प्रकट कर परम धाम को प्राप्त किया। लेकिन रावण? वह शक्तिशाली और बुद्धिमान था लेकिन उसके मन में पलने वाले दुष्ट संस्कार ने उसके सारे कुल को ही नष्ट कर डाला। सोने की लंका की ईंट से ईंट बज गई इसलिये आज कोई रावण का नाम लेना भी पसंद नहीं करता।

- कपूरचन्द जैन पाटनी
प्रधान सम्पादक

शेष पृष्ठ 3 का....

मनाये जाने की जानकारी दी। श्री वीनस जैन ने श्री सेठी जी एवं सेठी जी की माँ के जीवन परिचय एवं योगदान के बारे में बताया।

श्री सेठी जी के पुत्र श्री धर्मेन्द्र जैन सेठी ने अपने पिताजी की याद में सन् 2022 में दिल्ली, 2023 में गुवाहाटी, 2024 में बेंगलूरू में जैन धरोहर दिवस मनाये जाने तथा अपने पिताजी की याद में प्रतिवर्ष निर्मल कुमार जैन सेठी मेमोरियल 2 पुरस्कार प्रदान करने की जानकारी दी।

इस अवसर पर वर्ष 2024 में जैन धरोहर दिवस का सर्वश्रेष्ठ आयोजन किये जाने की श्रृंखला में श्री गजेन्द्र पाटनी, रायपुर एवं डॉ. यतीश जैन, जबलपुर को सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम को सुशोभित किया महाराष्ट्र सरकार के मंत्री श्री मंगल प्रभात जी लोढा ने। उन्होंने सेठी जी के कार्यों की बहुत प्रशंसा करते हुये कहा कि वह सेठी जी के द्वारा किये गये कार्यों से बहुत प्रभावित हैं। उन्होंने महाराष्ट्र सरकार की ओर से इस संस्था के लिये स्थायी कार्य करने का भी आश्वासन दिया। एक्स एम एलए मीरा महेन्द्र गीता जैन एवं धड़क कामगार यूनियन के अभिजीत राणे जी ने आयोजन में भाग लिया और सहयोग देने की बात कही, वे काफी प्रसन्न हुये कि जैन इतने आगे पहुंच चुके हैं उनकी परम्परा और दिनचर्या से वे काफी प्रभावित हैं। ब्र. श्री देवेन्द्र भैया जी ने जैन धरोहर दिवस, जीर्णोद्धार एवं पुरातत्व के ऊपर प्रकाश डाला। समाज के वरिष्ठ जैन अलग-अलग विभिन्न स्थानों से आकर जुड़े। निर्मल जी सेठी की 40 साल की दिनचर्या का वीडियो देखकर सभी ने उनके कार्यों की सराहना की। इस आयोजन में अखिल भारतवर्ष की सभी संस्थाओं के प्रतिनिधियों के साथ व्यापारी समाज के लोगों ने भी भाग लिया। आयोजन में सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत सुन्दर भजन प्रस्तुत किये गये।

इस अवसर पर सेठी ट्रस्ट द्वारा निर्मल कुमार जी सेठी मेमोरियल पुरस्कार 'कला एवं पुरातत्व' के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने वाली श्रीमती डॉ. मालिनी गोस्वामी, गुवाहाटी को तिलक श्रीमती ज्ञाना देवी सेठी, मोमेंटो श्रीमती कल्पना बाकलीवाल, शॉल श्रीमती रेखा जैन, माला श्रीमती सरिता जैन, अभिनंदन पत्र श्रीमती रिंकू जैन एवं चेक श्रीमती मधु जैन ने प्रदान किया। 'दर्शन एवं साहित्य' के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने वाले स्व. कन्हैयालाल खेडकर, नागपुर की पोती जंवाई स्नेहल उदय मिश्रीकोटकर को मोमेंटो श्री वर्धमान पांडेय, शॉल श्री महावीर ठोले, अभिनंदन पत्र श्री सुमित जैन नागपुर एवं चेक श्री महावीर जी सेठी ने प्रदान की। डॉ कल्याणमल गंगवाल, पूना को आजीवन जिन धर्म प्रभावक की उपाधि से विभूषित किया गया। उनको मोमेंटो श्री अशोक चूड़ीवाल, शॉल श्री अशोक छाबड़ा, माला श्री हुलासचंद जी सेठी, अभिनंदन पत्र श्री अशोक कुमार सेठी एवं चेक श्री अजित चांदूवाड़ ने प्रदान किया।

श्री धर्मेन्द्र जी सेठी अपने पिताजी के पदचिन्हों पर आगे बढ़ें ये पूरे जैन समाज की भावना है और सभी ने श्री धर्मेन्द्र जैन की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर धर्मेन्द्र जी के चाचा श्री हुलासचंद जी सेठी सभी बुआ जी, बहिनें व श्री संजय जी गंगवाल व अरूण जी बाकलीवाल सहित पूरा परिवार और ससुराल पक्ष के श्री सीपी गोधा, रमेश जी गोधा परिवार मौजूद रहा। श्री के सी जैन जी, श्री तरूण जी काला, प्रभात जी ने जुहू में 4 मई को मंदिर बनने व वेदी शिलान्यास की जानकारी समाज को दी। तीर्थ संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजकुमार जैन सेठी ने सेठी जी के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये बताया कि श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने सम्पूर्ण भारतवर्ष में जितने जिले हैं सभी जिलों एवं शहरों में भ्रमण करके जैन मंदिरों के दर्शन किये एवं जीर्णोद्धार के कार्यों में योगदान दिया। भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने रजत शर्मा के एक प्रश्न के जवाब में बताया था कि भारतवर्ष के 90 प्रतिशत जिलों में मैंने भ्रमण करके रात बितायी है। उसी तरह श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने भी सारे भारतवर्ष के जिलों का भ्रमण किया था। सभी साधर्मी बन्धुओं के वात्सल्य भोजन की व्यवस्था की गयी थी। मंच संचालन श्रीमती सुधा जैन, कोलकाता ने बहुत ही सुचारू रूप से किया। इसके साथ ही सम्पूर्ण भारतवर्ष में करीब 500 स्थानों पर जैन धरोहर दिवस का आयोजन किया गया। स्व. निर्मल कुमार जी सेठी 40 वर्षों तक महासभा के अध्यक्ष रहे उन्होंने अध्यक्ष बनने के बाद भारतवर्ष के सभी 28 प्रान्तों में महासभा की प्रान्तीय शाखाओं की स्थापना की। सेठी जी ने जैन धर्म के लिए जो कार्य किये हैं उन्हें देखते हुये उनकी प्रथम पुण्य स्मृति में 27 अप्रैल को प्रतिवर्ष जैन धरोहर दिवस के रूप में मनाये जाने का प्रस्ताव श्री शुभ मजूमदार सुपरिटेंडेंट आर्कियोलॉजिस्ट कोलकाता सर्किल आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया द्वारा अम्बेडकर स्टेडियम, नई दिल्ली में किया गया था। जिसका वहाँ की उपस्थित सभी महानुभावों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

उनकी पुण्यतिथि वर्ष 2022 में दिल्ली एवं मथुरा में और वर्ष 2023 में गुवाहाटी एवं सूर्यपहाड़ में एवं वर्ष 2024 में श्रवणबेलगोला एवं बंगलौर में मनायी गयी थी। जैन धरोहर दिवस के अवसर पर दो विद्वानों को ''दर्शन एवं साहित्य तथा कला एवं पुरातत्व के क्षेत्र'' में दिये गये योगदान के लिये पुरस्कृत कर सम्मानित किया जाता है। श्री निर्मल कुमार जी जैन सेठी ने अपने जीवनकाल में सम्पूर्ण भारतवर्ष में फैली जैन धरोहर की रक्षा के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया।

जयपुर की ओर विहार कर रहे

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जिन धर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज एवं समस्त मुनि संघ के चरणों में

शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन

नमनकर्ता: राजेन्द्र कुमार जैन, भागचन्द्र जैन एवं समस्त छाबड़ा परिवार

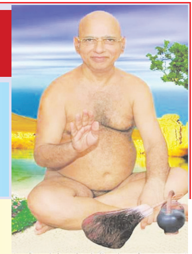

Jain Group

'Manik Ratan Bldg', By lane Kamal Patrol Pump, H. B. Road, Machkhowa, Guwahati - 781009

सुमतिधाम इन्दौर में सम्पन्न आचार्यश्री विशुद्ध सागरजी के पट्टाचार्य महोत्सव में

महासभा के पदाधिकारी

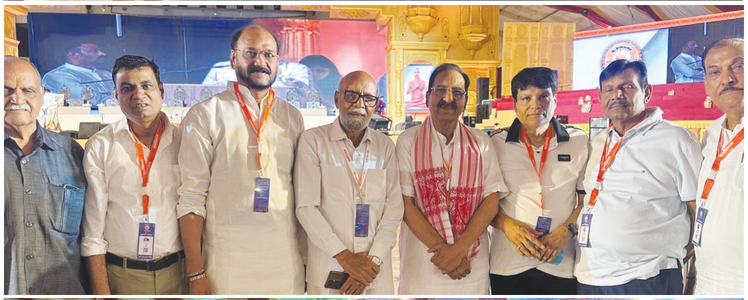

आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज की अपमानजनक फोटो को लेकर

जैन समाज ने एडिशनल एसपी एवं साइबर क्राइम प्रभारी से मुलाकात कर ज्ञापन सौंपा

रायपुर (विश्व परिवार)। महाराष्ट्र के जालना जिले में जफराबाद निवासी ज्ञानेश्वर गाढ़े ने राजनीतिक एवं निजी स्वार्थ हेतु महाराष्ट्र के एक नेता नितेश राणे का चेहरा जैन धर्म के समाधिस्थ गुरुदेव 108 श्री विद्यासागर जी महाराज की फोटो को टेंपरिंग करके विकृत किया और जान बूझकर सोशल मीडिया एवं फेसबुक में अपलोड किया, जैन धर्म इस कृत की कड़े शब्दों में निंदा करता है। हमारे जैन गुरु का अपमान नहीं सहेगा जैन समाज, संपूर्ण जैन समाज में इस विषय को लेकर रोष व्याप्त है। सकल जैन समाज रायपुर की प्रतिनिधी मंडल ने सिविल लाइन स्थित कार्यालय में एडिशनल एसपी एवं साइबर क्राइम प्रभारी से मुलाकात कर शिकायत पत्र दिया और आग्रह किया कि भारतीय न्याय संहिता के अंतर्गत

सोशल मीडिया में प्रसारित एवं प्रचारित जैन धर्म की धार्मिक विश्वासों के प्रतीक गुरुओं का अपमान करने वाली टिप्पणी करने के वाले अपराधी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति के ऊपर प्रकरण दर्ज कर 7 दिन के अंदर कठोर से कठोर कार्रवाई करें अन्यथा शांति प्रिय जैन समाज क्रमशः आंदोलन करेगा। दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष नरेश जैन के नेतृत्व में विनोद जैन, नरेंद्र जैन, यशवंत जैन, दिलीप जैन, राजेश जैन, सुरेश पाटनी, अजय गंगवाल, सनत गंगवाल एवं लोकेश चंद्रकांत जैन उपस्थित रहे।

पट्टाचार्य महोत्सव में अशोकजी पाटनी

इंदौर। सुमतिधाम में निर्ग्रन्थ सन्तों के दर्शनार्थ आर. के. मार्बल के चैयरमैन अशोक जी पाटनी सपरिवार दर्शन करने पधारे व आचार्य 108 श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के प्रवचनों का लाभ लिया। अशोक जी को अपने पास पाकर प्रत्येक व्यक्ति प्रमुदित हुआ। लाखों लोगों की दुआयें जिनके साथ चलती हैं ऐसे व्यक्ति के पदार्पण से सुमतिधाम महोत्सव में चार-चांद लगना स्वाभाविक था।

- शेखरचंद पाटनी

मलयागिरि तीर्थ (जमुई) में मनाया गया ज्ञान कल्याणक महोत्सव

रवि कुमार जैन, राजगीर

24वें तीर्थंकर वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी की कैवल्यज्ञान स्थली श्री मलयागिरी दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र, मलयपुर (जमुई) बिहार में दिनांक 07.05.2025 (बुधवार) वैशाख शुक्ल दशमी को केवलज्ञान कल्याणक महोत्सव भक्तिमय वातावरण में सानन्द हुआ।

राजकीय अतिथि, कवि, हृदय, वात्सल्य मूर्ति, अभीक्ष्ण ज्ञानपयोगी, आचार्य 108 श्री शशांक सागर जी मुनिराज अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में विराजमान हैं

शशांक वाणी

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण, बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन, ऐसे आचार्य शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत शत नमन

अरुचि उत्साह को मार देती है आशा हो तो उत्साह कभी नहीं मरता है

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

1. श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर, जयपुर)
2. पवन कुमार बड़जात्या मरवावाले किशनगढ़
3. श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपर)
4. श्रेष्ठी अनूप चंद जैन (भुसावर वाले, जयपुर)
5. श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोलिया (मारूजी का चैक, जयपुर)

1. अरूण कुमार काला अध्यक्ष (कीर्ति नगर जयपुर)
2. अशोक चांदवाड, (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
3. भंवरी देवी काला ध.प. महेन्द्र काला, (स्वर्णपथ मानसरोवर जयपुर)
4. श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)
5. प्रेमचन्द सुभाषचन्द लक्ष्मी बगड़ा (नेमीसागर कालोनी, जयपुर)

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

मारवाड़ी समाज राजनीति में नगण्य क्यों है? एक विस्तृत विश्लेषण

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

भारत की आर्थिक और सामाजिक संरचना में मारवाड़ी समुदाय का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। व्यापार, उद्योग और दान-पुण्य के क्षेत्र में यह समाज अग्रणी रहा है, लेकिन जब राजनीति की बात आती है, तो मारवाड़ी समाज अपेक्षाकृत नगण्य भूमिका निभाता है। जबकि अन्य व्यवसायिक समुदायों, जैसे कि गुजराती और पंजाबी, ने राजनीति में अपनी मजबूत पकड़ बनाई है, मारवाड़ी समाज इस क्षेत्र में उतना प्रभावी नहीं रहा है। इसके पीछे कई ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और व्यवहारिक कारण हैं, जिनका विस्तृत विश्लेषण नीचे किया गया है।

1. पारंपरिक रूप से व्यापार-केंद्रित मानसिकता: मारवाड़ी समाज की प्राथमिकता हमेशा व्यापार और आर्थिक समृद्धि रही है। यह समुदाय मुख्य रूप से व्यापार, उद्योग और वित्तीय क्षेत्रों में अपनी पकड़ मजबूत करने में विश्वास रखता है। राजनीति को एक अस्थिर और अनिश्चित क्षेत्र माना जाता है, जहां वित्तीय स्थिरता की गारंटी नहीं होती।

मारवाड़ी परिवार अपने बच्चों को व्यापारिक कौशल सिखाने और अपने पारंपरिक व्यवसाय को आगे बढ़ाने में अधिक रुचि रखते हैं। अधिकांश मारवाड़ी परिवारों में बच्चों को कम उम्र से ही व्यवसाय की जिम्मेदारी संभालने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, जिससे वे राजनीति की ओर आकर्षित नहीं होते।

2. राजनीतिक जोखिम से बचने की प्रवृत्ति: राजनीति एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें वित्तीय और सामाजिक जोखिम अधिक होते हैं। मारवाड़ी समुदाय का मूल स्वभाव जोखिम - न्यूनतम (तपा अमतेम) होता है, जो उन्हें राजनीति जैसे अनिश्चित क्षेत्र में जाने से रोकता है।

राजनीति में धन और समय का बड़ा निवेश करना पड़ता है, लेकिन सफलता की कोई गारंटी नहीं होती। भ्रष्टाचार, अनिश्चितता, कानूनी पचड़े और हिंसा से जुड़ी घटनाएँ भी मारवाड़ी समाज को राजनीति से दूर रखती हैं।

व्यापारिक समुदाय के रूप में, वे स्थिरता को प्राथमिकता देते हैं और विवादों से बचने की कोशिश करते हैं।

3. सामाजिक संरचना और जीवनशैली: मारवाड़ी समाज अपनी पारंपरिक सामाजिक संरचना को बनाए रखने में विश्वास रखता है। पारिवारिक मूल्यों और पारिवारिक एकता को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। राजनीति में आने पर पारिवारिक जीवन प्रभावित हो सकता है, इसलिए इसे कम प्राथमिकता दी जाती है। मारवाड़ी समुदाय में - पुण्य और धर्म का विशेष स्थान है। राजनीति की तुलना में धार्मिक और सामाजिक कार्यों में योगदान देना अधिक श्रेयस्कर माना जाता है।

4. राजनीति में नेटवर्किंग की कमी: राजनीति में सफल होने के लिए मजबूत नेटवर्किंग की आवश्यकता होती है। मारवाड़ी समाज में राजनीतिक संपर्क सीमित होते हैं क्योंकि उनके ज्यादातर संबंध व्यापारिक जगत से जुड़े होते हैं। समाज के भीतर भी राजनीति को लेकर अधिक रुचि नहीं होने के कारण एक राजनीतिक वातावरण विकसित नहीं हो पाया है।

राजनीतिक दलों में सक्रिय भागीदारी न होने के कारण मारवाड़ी नेताओं को उच्च पदों तक पहुंचने में कठिनाई होती है।

5. जातिगत और क्षेत्रीय राजनीति का प्रभाव: भारत की राजनीति जातिवाद और क्षेत्रवाद पर आधारित है। समुदाय, जो मूल रूप से राजस्थान से निकला है, लेकिन पूरे भारत में बसा हुआ है, किसी एक क्षेत्र में प्रभावी नहीं है। क्षेत्रीय राजनीति में स्थानीय समुदायों की पकड़ मजबूत होती है, जिससे मारवाड़ी समाज हाशिए पर चला जाता है। जातिगत समीकरणों में मारवाड़ी समाज का कोई विशेष राजनीतिक वोट बैंक नहीं बनता, जिससे राजनीतिक दल उन्हें प्राथमिकता नहीं देते।

6. राजनीतिक नेतृत्व का अभाव: राजनीतिक नेतृत्व की अनुपस्थिति भी एक महत्वपूर्ण कारण है। समाज में कोई बड़ा राजनीतिक आदर्श या प्रेरणास्त्रोत नहीं रहा, जिससे युवा राजनीति की ओर आकर्षित हों। व्यापारी वर्ग का ध्यान उद्योगों और वित्तीय संस्थानों को नियंत्रित करने पर अधिक रहता है, जिससे राजनीति में नेतृत्व का अभाव बना रहता है।

7. धन और राजनीति का संबंध: हालांकि राजनीति में धन का बड़ा प्रभाव होता है, लेकिन मारवाड़ी समाज इसे सीधे राजनीति में लगाने के बजाय परोक्ष रूप से योगदान देना पसंद करता है। कई मारवाड़ी व्यवसायी राजनीतिक दलों को आर्थिक रूप से समर्थन देते हैं, लेकिन स्वयं राजनीति में आने से बचते हैं। वे सत्ता में प्रत्यक्ष भागीदारी के बजाय बैकग्राउंड में रहकर अपना प्रभाव बनाए रखना पसंद करते हैं।

8. समाज की प्राथमिकताएँ और राजनीति की अपेक्षाएँ: मारवाड़ी समाज की प्राथमिकताएँ राजनीति की अपेक्षाओं से मेल नहीं खातीं। राजनीति में सामाजिक और जनहित के कार्यों को प्राथमिकता दी जाती है, जबकि मारवाड़ी समाज व्यवसाय और धन-संचय को अधिक महत्वपूर्ण मानता है। राजनीति में सक्रिय भागीदारी के लिए संघर्ष, आंदोलन और जनसंपर्क की आवश्यकता होती है, जो मारवाड़ी समाज की कार्यशैली से मेल नहीं खाता।

9. इतिहास में राजनीतिक प्रभाव की कमी: भारत के स्वतंत्रता संग्राम और उसके बाद की राजनीति में मारवाड़ी समाज का योगदान अपेक्षाकृत कम रहा है। 20वीं शताब्दी में जब भारत की राजनीति का स्वरूप तय हो रहा था, तब मारवाड़ी समाज व्यापार और उद्योग में व्यस्त था। समाज ने राजनीति में प्रवेश करने के बजाय आर्थिक सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी, जिससे उनका राजनीतिक प्रभाव सीमित रह गया।

मारवाडी समाज को राजनीति में प्रभावी भूमिका निभाने के लिए आवश्यक बदलाव और कदम: मारवाड़ी समाज को यदि राजनीति में अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज करानी है, तो उसे अपनी पारंपरिक सोच में कुछ बदलाव करने होंगे और सक्रिय रूप से राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेना होगा। इसके लिए निम्नलिखित बदलाव और रणनीतियाँ अपनानी आवश्यक हैं:

1. मानसिकता में परिवर्तन: राजनीति को सम्मानजनक करियर मानना होगा: अब तक मारवाड़ी समाज राजनीति को एक अस्थिर और अनिश्चित क्षेत्र मानता रहा है। इसे बदलने के लिए-6

- राजनीति को भी व्यापार जितना ही महत्वपूर्ण समझना होगा।
- युवाओं को राजनीति में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित करना होगा।
- राजनीति को सिर्फभ्रष्टाचार और अस्थिरता से जोड़कर देखने के बजाय इसे समाज सेवा और प्रभावी नेतृत्व का माध्यम मानना होगा।

2. युवाओं को राजनीति में प्रवेश के लिए प्रेरित करना: मारवाड़ी समाज के अधिकांश युवा शिक्षा के बाद व्यापार या कॉर्पोरेट सेक्टर में चले जाते हैं। यदि समाज राजनीति में अपनी पकड़ मजबूत करना चाहता है, तो -

- युवाओं को छात्र राजनीति (कॉलेज/यूनिवर्सिटी चुनाव) में भाग लेने के लिए प्रेरित करना होगा।
- संस्थान स्तर पर राजनीति की बुनियादी समझ विकसित करने के लिए कार्यशालाएँ और सेमिनार आयोजित करने होंगे।
- राजनीति में सफलता प्राप्त कर चुके मारवाड़ी नेताओं को प्रेरणा स्त्रोत के रूप में प्रस्तुत करना होगा।

3. राजनीतिक नेटवर्किंग और जनसंपर्क विकसित करना:

- राजनीति में सफलता के लिए मजबूत नेटवर्किंग आवश्यक है। इसके लिए -
- स्थानीय, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न राजनीतिक दलों से संपर्क बनाना होगा।
- अन्य व्यवसायिक समुदायों की तरह लॉबिंग और पॉलिटिकल फंडिंग के माध्यम से अपनी भागीदारी बढ़ानी होगी।
- सामाजिक और राजनीतिक संगठनों के साथ मिलकर काम करना होगा।

4. अपने नेताओं को बढ़ावा देना और समर्थन देना: मारवाड़ी समाज के कई लोग राजनीति में आते तो हैं, लेकिन समाज से उन्हें अपेक्षित समर्थन नहीं मिलता। जो लोग राजनीति में आना चाहते हैं, उन्हें सामाजिक, आर्थिक और नैतिक समर्थन मिलना चाहिए। समाज के व्यापारी वर्ग को चाहिए कि वे केवल राजनीतिक दलों को चंदा देने के बजाय अपने समाज के उम्मीदवारों को भी आर्थिक रूप से समर्थन दें। एक राजनीतिक नेतृत्व मंच (Political Leadership Forum) बनाकर अपने नेताओं को प्रशिक्षित और तैयार करना चाहिए।

5. राजनीतिक दलों में सक्रिय भागीदारी बढ़ाना: मारवाड़ी समाज यदि राजनीति में प्रभावी भूमिका निभाना चाहता है, तो केवल बैकग्राउंड में रहकर काम करने से कुछ नहीं होगा। इसके लिए -

- मुख्यधारा की राजनीति में शामिल होना होगा।
- विभिन्न राजनीतिक दलों के अंदर उच्च पदों तक पहुंचने के लिए मेहनत करनी होगी।
- अपने समाज से सांसद, विधायक, मंत्री और स्थानीय जनप्रतिनिधि बनाने के लिए प्रयास करना होगा।

6. वोट बैंक और सामुदायिक एकता विकसित करना: आज की राजनीति में 'वोट बैंक' का बहुत महत्व है। मारवाड़ी समाज को राजनीतिक रूप से प्रभावी बनने के लिए -

- एक संगठित वोट बैंक के रूप में खुद को स्थापित करना होगा।
- समाज को एकजुट करना होगा ताकि राजनीतिक दल उन्हें गंभीरता से लें।
- महत्वपूर्ण चुनावों में सामूहिक रूप से अपने हितों को देखते हुए मतदान करना होगा।

7. क्षेत्रीय और जातिगत राजनीति में प्रभावी भूमिका निभाना: भारत की राजनीति में जातिगत और क्षेत्रीय समीकरण बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। मारवाड़ी समाज को स्थानीय समुदायों के साथ बेहतर तालमेल बनाना होगा। विभिन्न राज्यों में मारवाड़ी समाज के प्रभाव को बढ़ाने के लिए स्थानीय राजनीतिक दलों के साथ गठजोड़ करना होगा। किसी एक क्षेत्र में राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने की योजना बनानी होगी।

8. मीडिया और जनमत निर्माण में भागीदारी: राजनीति में प्रभाव बढ़ाने के लिए मीडिया और जनमत निर्माण बहुत आवश्यक है। इसके लिए -

- मारवाड़ी समाज को मीडिया (अखबार, न्यूज चैनल, डिजिटल प्लेटफॉर्म) में अधिक प्रभावी भूमिका निभानी होगी।
- सोशल मीडिया पर अपने नेताओं का प्रचार-प्रसार करना होगा।
- जनता के मुद्दों पर खुलकर बात करने और आंदोलनों में भाग लेने से राजनीति में पहचान बनेगी।

9. सामाजिक कार्यों और जनसेवा में सक्रिय भागीदारी: राजनीति में आने से पहले समाज सेवा में सक्रिय भूमिका निभाना आवश्यक है। मारवाड़ी समुदाय को शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और अन्य सामाजिक मुद्दों पर काम करना होगा। जनता से जुड़ाव बढ़ाने के लिए जनहित के मुद्दों पर आंदोलन और अभियानों में भागीदारी करनी होगी। जनता के बीच लोकप्रियता बढ़ाने के लिए समाजसेवी और धार्मिक कार्यों को राजनीति से जोड़ना होगा।

10. लॉन्ग-टर्म पॉलिटिकल प्लानिंग और संस्थागत समर्थन: राजनीति में प्रभावी भूमिका निभाने के लिए केवल कुछ व्यक्तियों की भागीदारी पर्याप्त नहीं होगी। इसके लिए -

- एक संस्थागत तंत्र (Political Think Tank) विकसित करना होगा, जो समाज के राजनीतिक भविष्य की रणनीति तैयार करे।
- राजनीतिक शिक्षा और प्रशिक्षण देने के लिए विशेष संस्थान या संगठन बनाए जाएँ।
- पार्टी लाइन से ऊपर उठकर अपने समाज के उम्मीदवारों को समर्थन देने की नीति अपनाई जाए।

निष्कर्ष: मारवाड़ी समाज का राजनीति में नगण्य होना कई ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और व्यवहारिक कारणों से जुड़ा हुआ है। इस समाज ने व्यापार और अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, लेकिन राजनीतिक क्षेत्र में इसकी उपस्थिति सीमित रही है। मारवाड़ी समाज को यदि राजनीति में प्रभावी भूमिका निभानी है, तो उसे अपनी पारंपरिक सोच और प्राथमिकताओं में बदलाव लाना होगा। व्यापार और उद्योग में सफलता प्राप्त करने के बाद, यदि यह समाज राजनीति में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है, तो इससे न केवल समाज की स्थिति मजबूत होगी, बल्कि पूरे देश की राजनीति में संतुलन भी बनेगा क्योंकि राजनीतिक हस्तक्षेप आजकल अत्यंत जरूरी हो गया है - कारण:

- धर्म की रक्षा केवल उपासना से नहीं, राजनीतिक चेतना से भी होती है।
- जहाँ संतों की वाणी दबती है, वहाँ नेता की आवाज उठनी चाहिए।
- धन से मंदिर बनते हैं पर सत्ता से मंदिर बचाए जाते हैं।
- जो समाज अपने प्रतिनिधि नहीं चुनता,

समाधान जिज्ञासाओं से

- मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी

- अभव्य का समवशरण में प्रवेश अभवकूट तक तो होता है लेकिन श्रीमण्डप में प्रवेश नही होता, भगवान के दर्शन वो नहीं कर पाता। एक मत के अनुसार सम्यक्दृष्टि ही श्रीमण्डप में प्रवेश करते है, मिथ्यादृष्टि श्रीमण्डप के बाहर नाट्यशालाओं में नाटक वगैरह देखकर लौट आते है। दूसरे मत में ऐसे जीव भी समवशरण पहुँचे, जिन्हें सम्यक्तव की प्राप्ति नहीं हुई।
- भोगभूमि के जीवों का भोजन, चक्रवर्ती के भोजन की अपेक्षा अधिक पोष्टिक होता है क्योंकि वह कल्पवृक्षों से प्राप्त होता है, उनकी उम्र व काया भी बड़ी है।
- 63 शलाका पुरुष अनन्त संसारी, अभव्य नहीं हो सकते।
- यदि सीधे-सीधे स्पर्श कर अशुद्ध हो गए, आपके ज्ञान में है तो छींटे आदि से कुछ नहीं होता, आप अभिषेक, आहार नहीं दे सकते, वस्त्र ही बदलना चाहिए। यदि मालूम नहीं है, डाउट है तो फिर छींटे ले लेते है तो कोई बात नहीं। बाकी आगम में इसका वर्णन नहीं।
- यदि हमारी शांत रहने से कुछ फायदा है तो थोड़ा अपमान का घूँट भी पी जाओ, ईगो पॉइंट मत बनाओ। 50: झगड़े ईगो पॉइंट के है। जहाँ प्रीस्टेज बन जाये कि सत्य को भी झुकाना चाहता है और असत्य की विजय चाहता है तो फिर झुकना भी नही चाहिए।
- सूतक में भी शिखर जी की वंदना करने में कोई बाधा नहीं है क्योंकि वहाँ चरण नहीं, चरण चिन्ह है, महिलाएं भी स्पर्श कर सकती है लेकिन अभिषेक या आहार वाली बात है तो सूतक वाले को तुरंत सूचना दे देनी चाहिए।
- दूसरे के दुःख में रोयेंगे तो हमें साता वेदनीय का बंध होता है और स्वयं के दुख में रोयेंगे तो असाता वेदनीय का बंध होता है।
- सौधर्मेन्द्र भगवान के शरीर में 1008 लक्षणों को देखता हुआ, दाएं पैर के अंगूठे के नाखून के सामने वहाँ पर जो आकृति बनी रहती है, सौधर्मेन्द्र उसे भगवान का चिन्ह घोषित करता है। मूर्तियों पर चिन्हों की परंपरा बहुत बाद में मिली।
- यदि आपके पास णमोकार मंत्र है तो कोई देव आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकता, ये आगम का वचन है। देवताओं में कोई ज्यादा ताकत नहीं होती, वे डराते ज्यादा है, हमें डरना नही चाहिए।

संसार स्वार्थ से चलता है आप कुछ भी करो, कुछ भी कहो, ये संसार बिन स्वार्थ के नहीं चल सकता

– अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज अष्टापद बद्रीनाथ में पूजन दीप आराधना हुई संपन्न

नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल
औरंगाबाद, संवाददाता

औरंगाबाद। अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने उत्तराखंड के बद्रीनाथ में अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्नसागर जी महाराज, उपाध्याय श्री 108 पियूष सागर जी महाराज के सानिध्य में आदिनाथ आध्यात्मिक फाउंडेशन अष्टापद बद्रीनाथ द्वारा प्रातः पूजन दीप आराधना हुई संपन्न हुई।

अभिषेक एवं शांतिधारा श्री दिगम्बर जैन मंदिर जिला चमोली में ससंघ की निर्विघ्न संपन्न हुई आहारचर्या। गुरुपूजन पश्चात् विहार बद्रीनाथ से 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थिति निखिल पीठ के लिए हुआ। मंगलमय पदविहार बद्रीनाथ से पदविहार करते हुए मार्ग के मध्य हुआ। आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने कहा कि ये तीन कार्य व्यर्थ हैं - सबको खुश करने की कोशिश, बदले का भाव और गुजरे हुए वक्त में डूबे रहना।

संसार स्वार्थ से चलता है आप कुछ भी करो, कुछ भी कहो, ये संसार बिन स्वार्थ के नहीं चल सकता। बेटे चार प्रकार के होते हैं - पहला पुत्र - एक पिछले जन्म का लेनदार बेटा। उसे आप कितना भी पढ़ाओ, कितना भी लिखाओ, उसे बड़ा करो। उसका विवाह करो और बस चल बसता है। लेन देन पूरा हुआ और चल बसा, तो समझना वो लेनदार पुत्र था। दूसरा पुत्र पिछले जन्म का बेरी भी पुत्र होकर आता है। ऐसा पुत्र कदम कदम पर दुःख देता है, छाती पर मूंग डालता है, नाक में दम करके रखता है, ऐसा पुत्र - पुत्र के रूप में दुश्मन होता है और पिछले जन्म का पूरा बदला लेता है। तीसरा पुत्र उदासीन पुत्र होता है, ना मित्र होता है ना बैरी होता है, ऐसा पुत्र मां बाप को ना सुख देता है, ना दुःख देता है, बस कहने का पुत्र होता है, बस कहने का। चौथा पुत्र होता है सेवक पुत्र। पिछले जन्म में आपने किसी की सेवा की और वही आपका पुत्र बनकर आ गया, ऐसा पुत्र सेवा करके सुख देता है। मां बाप की जो - जी जान से सेवा करता है, बुढ़ापे का सहारा बनता ही है। मां-बाप की कीर्ति को भी बढ़ाता है।

कोकापुर में भगवान शांतिनाथ जिनबिम्ब व जिन मंदिर का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 28 मई से 2 जून तक

आचार्य सुनील सागरजी महाराज ससंघ के सानिध्य में होगा आयोजन

सागवाडा के समीपवर्ती कोकापुर गांव मे सकल दशाहूमड दिगम्बर जैन समाज द्वारा श्वेत मार्बल पाषाण से नवनिर्मित शिखरबद्ध जिनालय का पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आगामी 28 मई से 2 जून तक आचार्य श्री सुनील सागरजी महाराज ससंघ सानिध्य में सम्पन्न होगा। छः दिवसीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव प्रतिष्ठाचार्य महावीर जैन, प्रतिष्ठाचार्य विनोद पगारिया विरल व ब्रह्मचारी विनय शास्त्री के तत्वावधान में सम्पन्न होगा। प्रतिष्ठाचार्य विनोद पगारिया ने बताया कि जैन आगम की वर्तमान चौबीसी के सोलहवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ को समर्पित इस जिनालय के पंचकल्याणक का शुभारंभ 28 मई को प्रातः ध्वजारोहण के साथ होगा साथ ही भगवान शांतिनाथ के गर्भ कल्याणक का पूर्व रूप प्रस्तुत किया जाएगा जिसमें तीर्थंकर माता के 16 सपनों का प्रस्तुतिकरण होगा। 29 मई को गर्भ कल्याणक उत्तर रूप अष्ट कुमारी देवीयों द्वारा

जगत जननी ऐरा देवा माता की सेवा की जाएगी। 30 मई को भगवान के जन्म कल्याणक अवसर पर पाण्डुक शिला पर तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ का जन्माभिषेक किया जाएगा साथ ही सायंकाल बालक तीर्थंकर का पालना झुलाया जाएगा। 31 मई को तप कल्याणक अवसर पर आचार्य सुनील सागरजी महाराज द्वारा सभी प्रतिष्ठेय प्रतिमाओं के दीक्षा संस्कार किये जाएंगे तथा मुनिराज अवस्था नामकरण विधि कर पिच्छी कमण्डल प्रदान किये जाएंगे। 1 जून को प्रातः ज्ञान कल्याणक अवसर पर तीर्थंकर महामुनिराज की आहारचर्या होगी वहीं दोपहर में अंकन्यास, नयनोन्मिलन, तिलकदान विधि के साथ सूरि मंत्रों के आलोक मे सभी प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा आचार्य संघ द्वारा की जाएगी।

इसके बाद सायं कैवल्य ज्ञान उत्पत्ति के बाद भव्य 12 सभा युक्त समवशरण की रचना की जाएगी जिसमें भगवान शांतिनाथ के गणधर के रूप में आचार्य सुनील सागरजी महाराज द्वारा भगवान की दिव्य देशना प्रसारित होगी, साथ ही 46 दीपकों से समवशरण की आरती होगी। महोत्सव के अंतिम दिन 2 जून को मोक्ष कल्याणक अवसर प्रातः भगवान के मोक्ष गमन पर निर्वाण लाडू चढाया जाएगा। विश्व शांति कामनार्थ सर्व शांति महायज्ञ की पूर्णाहूति के साथ कार्यक्रम स्थल से मन्दिर तक शोभायात्रा के साथ मन्दिर में नूतन वेदी पर मूलनायक भगवान शांतिनाथ व अन्य जिन बिम्बों की स्थापना की जाएगी।

धर्मेन्द्र जी सेठी का आगमन

पवन पहाड़िया, डेह, नागौर

डेह। श्री धर्मेन्द्र कुमार जी सेठी सुपुत्र स्वर्गीय निर्मलकुमारजी सेठी (बाबूजी) मेरे निजी निवास नेम निवास पधारे, हालांकि उनका मेरे राजस्थानी साहित्यकार सम्मान समारोह में 20 अप्रैल को पूज्य निर्मल बाबू के नाम से एक लाख का साहित्यकार सम्मान जोधपुर के सम्पादक साहित्यकार सम्माननीय पदमजी मेहता को भेंट करना था पर आप अति आवश्यक कार्य के चलते उस समारोह पर पहुंच नहीं पाए तथा आज पधारे तो हमने उनका हार्दिक स्वागत किया। आपकी नम्रता शालीनता की जितनी तारीफ की जाए कम ही होगी। जिनेन्द्र देव से यही विनती है आप ऐसी भावना में उत्तरोत्तर वृद्धि करते रहें व जननी जन्म भूमि से यह प्रेम भी फलता फूलता रहे।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा चैरिटेबल ट्रस्ट - सम्मानित ट्रस्टी,
समाजसेवा में निःस्वार्थ समर्पित, सौम्य और सरल स्वभाव एवं महासभा के प्रति गहरा लगाव रखते थे
समाज को अनेक प्रेरणादायक सेवाएं प्रदान की, सदैव महासभा के हित में कार्यरत
रहते हुए सेवा की परंपरा को नई दिशा देने में अग्रणी रहे,

स्व.श्री प्रभात जी ढोंग्या

महासभा की सेवा में उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा उनका जीवन महासभा के लिए एक दीपस्तंभ के समान था। श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा उनके इस दिव्य और प्रेरणादायक जीवन को कोटिशः नमन करती है।

हम प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को परमात्मा सिद्धशिला में स्थान प्रदान करें।

श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा परिवार
अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

समाज की। समाज द्वारा। समाज के लिए

djainmahasabha djainmahasabha djainmahasabha djainmahasabha digjainmahasabha.org

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

डायनामिक इंजीनियर्स प्रा. लि.
28, बैरकपुर ट्रन्क रोड
कोलकाता- 700002 'प.बं.'
फोन : 25577534

जो जीवन में कितना त्याग करता जाएगा वो उतना उठता जाएगा

- पंडित पारस जी शास्त्री

सोलहकारण भावनाओं से बनते हैं तीर्थंकर

- मुनि श्री विभोरसागर जी

पारस जैन 'पार्श्वमणि', संवाददाता

कोटा, 8 मई। पुण्योदय अतिशय क्षेत्र नसियां जी दादाबाड़ी कोटा में परम पूज्य आचार्य भगवन 108 श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य गुरूदेव निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज के पावन आशीर्वाद एवं प्रेरणा से आठ दिवसीय पुण्योदय सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर का पंचम दिवस पर शिविर संयोजिका अर्चना रानी जैन सर्राफ ने बताया कि नसियां जी में प्रातःकाल पूज्य मुनि श्री 108 विभोरसागर जी महाराज श्री के प्रवचन हुए जिसमें उन्होंने बताया कि जो होता है त्याग से ही जीवन की उन्नति होती है जिसके जीवन में त्याग नहीं होता उसके जीवन में उन्नति का मार्ग अवरुद्ध रहता है। जैन धर्म के अनुसार, त्याग जीवन की उन्नति का सबसे महत्वपूर्ण मार्ग है। त्याग के बिना जीवन में उन्नति प्राप्त करना असंभव है। प्राणी मात्र को त्याग को अपनाना चाहिए और जीवन में उन्नति प्राप्त करनी चाहिए। इसीलिए आचार्यों ने त्याग को श्रेयस्कर कहा है। अध्यक्ष जम्बू जैन सर्राफने राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी पारस जैन पार्श्वमणि पत्रकार को जानकारी देते हुये बताया कि प्रवचनों के पश्चात सांगानेर से पधारे पंडित श्री पारस जैन शास्त्री ने तत्वार्थ सूत्र की कक्षा में सभी को बताया कि तीर्थंकर प्रकृति नाम कर्म की सर्वश्रेष्ठ प्रकृति है। इस प्रकृति से तीर्थंकर पद को प्राप्त किया जाता है। तीर्थंकर प्रकृति एक अद्वितीय प्रकृति है, जो उदय में आने से पहले ही अपने फल दिखने लगती है। इसका अर्थ है कि जब यह प्रकृति किसी जीव के कर्मों में होती है तो वह जीव अपने कर्मों के अनुसार पहले से ही शुभ परिणाम और तीर्थंकर बनने की संभावना प्रदर्शित करने लगता है। तीर्थंकर प्रकृति के कारण ही कोई जीव तीर्थंकर बन पाता है, जो संसार सागर से पार लगाने वाला तीर्थ की रचना करता है। तीर्थंकर वे व्यक्ति हैं जो पूरी तरह से क्रोध, अभिमान, छल, इच्छा आदि पर विजय प्राप्त करते हैं, अगर किसी जीव के कर्मों में तीर्थंकर प्रकृति है, तो वह जीव पहले से ही अपने व्यवहार, ज्ञान और जीवनशैली में तीर्थंकर के गुणों को प्रदर्शित करने लगेगा। यह पहले से ही दर्शाने लगेगा कि वह तीर्थंकर बनने की ओर अग्रसर है। संयोजक धर्मचंद जैन धनोप्या ने बताया कि जहां देव शास्त्र गुरु धर्म, अध्यात्म आध्यात्मिक ज्ञान और भक्ति का अद्भुत संगम से बालबोध भाग (1) एक, बालबोध भाग (2) दो, छहढाला (पूर्वार्ध), छहढाला (उत्तरार्द्ध), इष्टोपदेश ग्रंथ, तत्वार्थ सूत्र, प्रश्नोत्तरी रत्नमालिका आदि ग्रंथों के लाभ मिल रहा है। निदेशक हुकम जैन काका ने बताया आज के अल्पाहार पुण्यार्जक श्रीमती सरिता जी राजेंद्र जी रोहित जी नितिशा जी निमिशा जी समस्त ठग परिवार शादी की वर्षगांठ के अवसर पर दीप प्रज्वलन कर महाराज श्री को श्रीफल अर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यकारिणी ने पुण्यार्जक परिवार का तिलक माला दुप्पटे पगड़ी पहनाकर कर सम्मान किया। प्रशसनिक मंत्री अशोक खादी ने बताया कि प्रातः 11 पांडुक शिलाओं पर 11 श्री जी के 11 झारी के द्वारा 11 पुण्यार्जकों ने श्रीमान राजेंद्र जी आशा जी हरसोरा, सुशीला बाई विवेक जी ठोरा, महावीर जी मित्तल, कमलेश जी चक्रेश जी कोटिया, विमलाबाई धनराज जी जेठानीवाल, महेंद्र जी अतुल जी पाटनी, पुष्पाबाई महावीर जी बागड़िया, गोपाल बाई लोकेश-सारिका पटौदी, सुरेश जी राहुल जी साकुण्या, जयप्रकाश जी सुनीता जी सबदरा ने धूमधाम से शांति धारा करके भगवान को विहार करवाया।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के पदाधिकारियों ने देखा विर्ले पार्ले मुम्बई में ध्वस्त किया गया जैन मंदिर

जीरकपुर में स्व. श्री निर्मल कुमार जी सेठी की चतुर्थ पुण्यतिथि को मनाया विश्व जैन धरोहर दिवस के रूप में

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

श्री दिगंबर जैन चैत्यालय चण्डीगढ़ जीरकपुर में पूर्व प्रधान श्री नवरत्न जैन की अगुवाई में महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्व. श्री निर्मल कुमार सेठी जी के चतुर्थ पुण्यतिथि स्मृति दिवस पर दीप प्रज्वलन कर सामूहिक रूप से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि दी गई। कार्यक्रम में 27.04.2025 को उनकी याद में विश्व जैन धरोहर दिवस के रूप में मनाया गया, इस अवसर पर श्री नवरत्न जैन ने बताया कि श्री निर्मल कुमार जैन सेठी जी द्वारा जैन धर्म की प्रभावना और विश्व भर में जैन सांस्कृतिक धरोहर के प्रचार-प्रसार में दिए गए अमूल्य योगदान को याद किया। अहिंसा चेरिटेबल सेवा समिति सभी सदस्यों से आग्रह करती है कि वे इस पुण्य अवसर पर उनकी स्मृतियों से प्रेरणा लेकर जैन धर्म एवं संस्कृति के संरक्षण और प्रचार में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाएं। श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के अध्यक्ष रहे श्री निर्मल कुमार सेठी जी के जीवन समर्पण, जैन धरोहर के प्रचार में उनके अथक प्रयास और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जैन-ग्रीक संबंधों के विकास हेतु उनके योगदान को हम सदैव याद रखेंगे, उनकी पवित्र स्मृतियाँ हम सभी के लिए हमेशा प्रेरणास्त्रोत रहेंगी।

पट्टाचार्य महोत्सव में जैन गजट संवाददाता

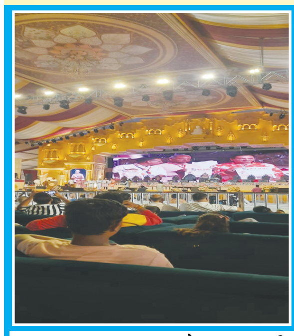

चित्र परिचय- 1-इंदौर में 2 मई को जैन गजट के राष्ट्रीय संवाददाता शेखरचन्द जी पाटनी जैन गजट के आचार्य विशुद्ध सागर विशेषांक का विमोचन कराते हुए 2- सुमति धाम में शेखरचन्द्र जी पाटनी का स्वागत तथा मेमोन्टो भेंट का दृश्य 3-शेखरचन्द जी पाटनी सुमतिधाम में विशाल धार्मिक सभा को सम्बोधित कर पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के चरणों में अपनी भावना रखते हुए।

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. गुरूजी जय जिनेन्द्र, मेरी एक जमीन गांव में पड़ी हुई है, मैं उसे बेचना चाहता हूँ, काफी समय से प्रयास कर रहा हूँ, मगर सफलता नहीं मिल पाई, मैं क्या करूं - विपिन जैन, आगरा

उत्तर - विपिन जी, आप रोजाना श्री चन्द्रप्रभु चालीसा पढ़ें और पन्ना रत्न का लॉकेट बुधवार को धारण करें, आपका कार्य शीघ्र पूरा होगा।

प्रश्न 2. गुरूजी जय जिनेन्द्र चरण स्पर्श, मेरा मन सरकारी नौकरी करने का है, क्या मेरी कभी सरकारी नौकरी लगेगी - रोहिता जैन, अम्बाला

उत्तर - रोहित जी, आप रोजाना श्री पदमप्रभु जी का चालीसा पढ़ें और माणिक्य रत्न रविवार को गले में लॉकेट के रूप में धारण करें, सफलता मिलेगी।

प्रश्न 3. गुरूजी जय जिनेन्द्र, क्या मेरी कुंडली में राजयोग है, है तो कौन सा - शिवानी जैन, दिल्ली

उत्तर - शिवानी जी, हर कुडली में राजयोग और बुरे दोष होते हैं। आपकी कुडली में शुक्र से मालव्य योग बना हुआ है जो बहुत अच्छा होता है।

प्रश्न 4. गुरूजी जय जिनेन्द्र, मेरी जन्म राशी कौन सी है, मेरा नाम अमित है - अमित जैन, हापुड़

उत्तर - अमित जी नाम से आपकी राशी मेष होती है, मगर जन्म कुंडली में चन्द्रमा, सिह, राशी में हैं तो आपकी जन्म राशी सिह बनती है।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062,
8826755078

मालवा रंगमंच समिति, म. प्र.
38वाँ मालवा कला सम्मान समारोह सम्पन्न

चिंतन बाकलीवाल प्लेबैक सिंगर बॉलीवुड को ''मालवा संगीत पुरस्कार'' से किया सम्मानित

पारस जैन 'पार्श्वमणि', संवाददाता

इंदौर (मध्य प्रदेश)। मालवा की माटी की मिठास और सुरों की सुगंध से भरपूर एक बेहद खास शाम स्थान रवीन्द्र नाट्यगृह, इंदौर में, मालवा रंगमंच समिति द्वारा आयोजित 38 वें मालवा कला सम्मान समारोह में सुप्रसिद्ध गायक बॉलीवुड प्लेबैक सिंगर चिंतन बाकलीवाल (सी बी रॉकस्टार) को ''मालवा संगीत पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित सम्मान उन्हें प्रसिद्ध बॉलीवुड सिंगर साधना सरगम जी के करकमलों द्वारा प्रदान किया गया। राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी पारस जैन पार्श्वमणि पत्रकार कोटा ने बताया कि इस अविस्मरणीय अवसर पर चिंतन जी ने न केवल यह सम्मान प्राप्त किया, बल्कि उन्होंने साधना सरगम जी के साथ मंच साझा कर एक सुंदर युगल प्रस्तुति भी दी, जिसने समूचे सभागार को भावविभोर कर दिया। यह बात बिल्कुल सत्य है कि चिंतन जी की गायकी में किशोर दा की आत्मा बसती है और उनकी आवाज में मालवा की खुशबू घुली है, यही कारण है कि उन्हें यह विशिष्ट सम्मान मिला। यह पुरस्कार न केवल उनके संगीत के प्रति समर्पण का प्रतीक है, बल्कि मालवा की सांस्कृतिक विरासत को जीवंत बनाए रखने की एक सुंदर अभिव्यक्ति भी है। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री केशव राय रहे सफल संचालन एवं संयोजनः श्री विष्णु प्रजापत ने शानदार अंदाज में कर आयोजन में चार चांद लगा दिए। आयोजन के मुख्य आयोजक दीपक चौकसे, पवन अग्रवाल, अमित सरडा, कैलाश वैष्णव एवं डॉ. मुकेश भंडारी रहे।

श्री विशुद्ध सागर जी मुनिराज को अनेकों उपाधियों के साथ-साथ अब "वात्सल्य रत्नाकर" के नाम से भी जाना जाएगा

अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद (पंजी.) ने लगभग 400 जैन संतों के पावन सानिध्य में आचार्य 108 श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के पावन चरणों में 27 अप्रैल से 2 मई 2025 तक सुमति धाम गोधा इस्टेट इंदौर में चलने वाले पट्टाचार्य महामहोत्सव एवं गुरु विराग जन्म जयंती महामहोत्सव के पावन अवसर पर ''अभिवंदना पत्र'' समर्पित करते हुए गुरुदेव को ''वात्सल्य रत्नाकर की उपाधि से अलंकृत किया।

इस सुअवसर पर परिषद् के साथ-साथ उपस्थित जन समूह ने करतल ध्वनि से अनुमोदना की।

अभिवंदना पत्र वचन के पश्चात सुमति धाम गोधा इस्टेट आयोजक कमेटी ने अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद (पंजी.) को स्मृति चिन्ह भेंट कर सभी का स्वागत सम्मान किया।

इस मौके पर परिषद् की सम्मानित सदस्य श्रीमती उर्मिल जैन कनाडा ने अभिवंदना पत्र का वाचन किया।

संस्थापक/राष्ट्रीय अध्यक्ष रवि जैन गुरुजी दिल्ली ने कहा कि आचार्य श्री का वात्सल्य अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद को पूर्व से प्राप्त होता रहा है। आज गुरुदेव को ''वात्सल्य रत्नाकर'' की उपाधि से अलंकृत कर पूरी परिषद् स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही है। साथ ही महामंत्री डॉक्टर हुकुम चंद जैन ग्वालियर, कोषाध्यक्ष डॉ. सुमेरचंद जैन दिल्ली, पंडित महावीर प्रसाद जैन आगरा, सुशील जैन दिल्ली, श्रीमती मंजुला जैन उज्जैन, अखिलेश जैन आदिश जैन इंदौर के साथ-साथ परिषद् के गणमान्य सदस्य एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

DOLPHIN WATERPROOFING
आधुनिक टेक्नोलॉजी से छत को रखे वाटरप्रूफ, हीटप्रूफ, वेदर प्रूफ पायें सीलन, लीकेज एवं गर्मी से राहत व बिजली के बिल में भारी बचत करें।
छत व दीवारों का बिना तोड़फोड़ के सीलन का निवारण
For Your New & Old Construction
RAJENDRA JAIN
DR. FIXIT WATERPROOFING EXPERT
Dr. Fixit Authorised Project Applicator

Mo. 80036-14691
116/194, Agarwal Farm, Mansarovar, Jaipur

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एक्सप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सम्पादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000

महामंत्री
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132

कोषाध्यक्ष
पवन गोधा
मो. 9311198985

प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

परामर्शक सदस्य
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड़
मो. 08107581334

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com

सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से
कोरियर से मंगाने पर
अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र.
रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391,
9415008344,7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on
Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh,
Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233,
7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

....
....
....

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।